सदस्य बनें
सच और सरोकार की पत्रकारिता से जुड़ें
वार्षिक सदस्यता : ₹ 500 मात्र
पूरा वर्ष अखबार निःशुल्क
पैनल विज्ञापन दें
अपने व्यवसाय/संस्था का प्रचार करें 'जन जन विचार' में।
किफायती • प्रभावी • विश्वसनीय
संपर्क : 69001 26012

जन जन की बात जन जन तक

साप्ताहिक

जन जन विचार

RNI Regd No. ASMUL/25/A2367

Guwahati, Friday, 20 March, 2026 :: Vol-10 Year-1 :: शुक्रवार । 20 मार्च 2026। शक संवत 1947। चैत्र । शुक्ल । द्वितीय। :: पृष्ठ-12। मूल्य - 5 रुपए

जन-जन विचार की ओर से आप सभी को हिन्दू नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं। यह नववर्ष आपके जीवन में सुख, समृद्धि और नई ऊर्जा लेकर आए। आइए, हम सब मिलकर सकारात्मक सोच और सामाजिक सद्भाव के साथ नए वर्ष की शुरुआत करें।
नवसंवत्सर की शुभकामनाएं!
— **जन-जन विचार परिवार**

जन चिंतन

दागदार व्यवस्था

एसोसिएशनफॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) की ताजा रिपोर्ट ने केरल की राजनीति का ऐसा चेहरा सामने रखा है, जो लोकतंत्र की आत्मा पर सवाल खड़ा करता है। 132 विधायकों में से 70 प्रतिशत पर आपराधिक मामले-और उनमें भी कई गंभीर आरोप जैसे हत्या, हत्या का प्रयास और महिलाओं के खिलाफ अपराध।

सवाल सीधा है-क्या कानून बनाने वाले खुद कानून तोड़ने के आरोपी हो सकते हैं?

चौंकाने वाली बात यह भी है कि आधे से ज्यादा विधायक करोड़पति हैं। करोड़ों की संपत्ति और आपराधिक मामलों का यह संगम बताता है कि राजनीति अब सेवा नहीं, बल्कि शक्ति और संपत्ति का खेल बनती जा रही है।

यह समस्या किसी एक दल की नहीं, बल्कि पूरे **शेष पृष्ठ 2 पर**

'अपनों' का बलिदान

हिमंत को भाजपा में लाने वाले को ही टिकट नहीं

राज्य में इस समय सबसे ज्यादा चर्चा जिस नाम की है, वह है सिद्धार्थ भट्टाचार्य-एक ऐसा नेता जिन्होंने पार्टी को खड़ा करने में अहम भूमिका निभाई, लेकिन इस बार टिकट से वंचित कर दिया गया। सिद्धार्थ भट्टाचार्य वही नेता हैं, जिन्होंने डॉ. हिमंत विश्व शर्मा को कांग्रेस से भाजपा में लाने में अहम भूमिका निभाई। 2014-15 में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष रहे, 2018 से 2021 तक शिक्षा मंत्री भी रहे। आज वही नेता पार्टी की सूची से बाहर हैं।

भाजपा उम्मीदवारों की सूची जारी

असम विधानसभा चुनाव 2026 के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की पहली उम्मीदवार सूची ने सियासत का तापमान अचानक बढ़ा दिया है। पार्टी ने कई मौजूदा विधायकों के टिकट काटकर और बड़ी संख्या में नए चेहरों को मौका देकर साफ संकेत दिया है कि इस बार चुनाव आक्रामक और परिणाम-केंद्रित रणनीति के साथ लड़ा जाएगा। सबसे बड़ा संदेश टिकट कटने से सामने आया है। वर्षों से संगठन में सक्रिय और प्रभावशाली रहे कई नेताओं को इस **शेष पृष्ठ 3 पर**

24 मार्च से हाई वोल्टेज प्रचार

असम चुनाव में भाजपा 24 मार्च से अपना आधिकारिक चुनावी अभियान शुरू करने जा रही है। पार्टी ने इस बार प्रचार के लिए पूरी ताकत झोंक दी है, जिसमें राष्ट्रीय नेतृत्व की सीधी भागीदारी देखने को मिलेगी।

कैंपेन प्लान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 4-6 बड़ी रैलियां, गृह मंत्री अमित शाह की करीब 8 सभाएं, कई केंद्रीय नेताओं का अलग-अलग क्षेत्रों में दौरा

राज्य के नेता भी सक्रिय

सर्वानंद सोनोवाल, दिलीप सैकिया और पबित्र मार्गेरिटा जैसे नेता राज्य स्तर पर प्रचार की कमान संभालेंगे।

मध्य गुवाहाटी से विजय गुप्ता को टिकट, प्रशंसकों में खुशी की लहर

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

वरिष्ठ भाजपा नेता विजय गुप्ता को गुवाहाटी मध्य विधानसभा सीट से पार्टी का टिकट मिलने पर उनके समर्थकों और हिंदीभाषी समाज में खुशी की लहर है। सेंट्रल गुवाहाटी से कई हिंदीभाषी उम्मीदवारों ने टिकट की दावेदारी

लगा बधाइयों को तांता

की थी, जिसमें विजय गुप्ता ने बाजी मारी।

जैसे ही भाजपा की सूची जारी हुई, विजय गुप्ता के शुभचिंतकों और समर्थकों ने उन्हें शुभकामनाएं और बधाई देना शुरू कर दिया। फेसबुक पर उनके शुभकामना संदेश वाले पोस्ट की **शेष पृष्ठ 2 पर**

टिकट बंटवारे से पार्टी में बगावत! इस्तीफों की झड़ी

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम विधानसभा चुनाव से पहले भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की उम्मीदवार सूची ने पार्टी के भीतर बड़ा राजनीतिक भूचाल ला दिया है। टिकट कटने से नाराज नेताओं ने न सिर्फ इस्तीफे दिए, बल्कि खुलकर बगावती तेवर भी दिखाने शुरू कर दिए हैं।

सबसे बड़ा झटका काछार के धोलाई से आया, जहां मौजूदा विधायक निहार रंजन दास ने सूची जारी होने के कुछ ही घंटों के भीतर पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। अपने पत्र में उन्होंने साफ लिखा कि उन्होंने 'ईमानदारी और समर्पण' से काम किया, लेकिन उनके योगदान को नजरअंदाज किया गया।

विवाद यहीं नहीं थमा। दिसपुर सीट से टिकट की उम्मीद लगाए बैठे वरिष्ठ नेता जयंत कुमार दास ने भी पार्टी छोड़ने के संकेत दिए। उन्होंने आरोप लगाया कि पार्टी

अब पुराने और समर्पित कार्यकर्ताओं को दरकिनार कर पूर्व कांग्रेस नेताओं को तरजीह दे रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा पर सीधा सवाल उठाते हुए उन्होंने कहा, **शेष पृष्ठ 3 पर**

पांच हिंदीभाषियों को मिला टिकट, समाज में उत्साह

भारतीय जनता पार्टी द्वारा पांच हिंदीभाषी नेताओं को उम्मीदवार बनाए जोने के लेकर राज्य के हिंदीभाषी समाज में गजब का उत्साह देखा जा रहा है। मालूम हो कि भाजपा ने सेंट्रल गुवाहाटी से विजय कुमार गुप्ता, ढेकियाजुली से अशोक सिंहल, लखीपुर से कौशिक राय, दुमदुमा से भूपेश ग्वाला तथा उदारबंद से राजदीप ग्वाला को पार्टी का टिकट प्रदान किया है। विभिन्न हिंदीभाषी संगठनों ने भाजपा उम्मीदवारों को शुभकामनाएं देते हुए उनके विजय की कामना की है। संगठनों ने हिंदीभाषी उम्मीदवारों को विजयी बनाने के लिए उनके पक्ष में मतदान की अपील की है।

अंदर पढ़ें

3 ☞ भूपेन और प्रद्युत की सीट भी पक्की
4 ☞ आदिशक्ति की उपासना
5 ☞ बंगाल में भाजपा को 'अपनों' पर भरोसा
6 ☞ 23 मार्च : जब तीन वीरों ने हंसते-हंसते दी कुर्बानी
7 ☞ शक्ति, श्रद्धा और साधना का महापर्व नवरात्र
8 ☞ विकसित भारत के निर्माण में लोक भवन, असम...
10 ☞ बिहू से पहले दसवीं बोर्ड का रिजल्ट
11 ☞ हॉकी विश्व कप में होगी भारत-पाक की भिड़ंत

बिहार की संस्कृति, असम की आत्मीयता : बिहार दिवस 24 को

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

गुवाहाटी की धरती एक बार फिर सांस्कृतिक एकता की सुंदर मिसाल बनने जा रही है। बिहार दिवस 2026 के पावन अवसर पर बिहार फाउंडेशन, गुवाहाटी चैप्टर द्वारा आगामी 24 मार्च को भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह कार्यक्रम केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि अपनी जड़ों से जुड़ने और सांस्कृतिक विरासत को संजोने का अवसर है।

114वें बिहार स्थापना दिवस के इस खास आयोजन में बिहार की समृद्ध परंपरा, लोकगीत, लोकनृत्य और लोककला की झलक देखने को मिलेगी। यह आयोजन न सिर्फ बिहारवासियों के लिए गर्व का क्षण है, बल्कि असम और बिहार के बीच भाईचारे और सांस्कृतिक समन्वय का प्रतीक भी है।

कार्यक्रम की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। इस गरिमामय समारोह में अनेक गणमान्य अतिथि शामिल होंगे और कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएंगे।

कार्यक्रम
स्थान : जी.एम.सी. प्रेक्षागृह, भांगागढ़, गुवाहाटी
दिनांक : 24 मार्च 2026
समय : शाम 4.30 बजे से 7.30 बजे तक

नव संवत्सर पर पंचांग का लोकार्पण

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

नव संवत्सर के पावन अवसर पर श्रीराम सेवा समिति द्वारा विक्रम संवत 2083 के पंचांग का विधिवत लोकार्पण किया गया। 15 मार्च 2026 को भारत विकास परिषद, मध्य गुवाहाटी के कार्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम में श्रद्धा, संस्कृति और परंपरा का सुंदर संगम देखने को मिला।

कार्यक्रम की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष डॉ. राधेश्याम तिवारी ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में अवकाशप्राप्त डीजीपी जीएम श्रीवास्तव उपस्थित रहे। इस अवसर पर पूर्व प्राचार्य डॉ. होमेश्वर कलित एवं संघ के प्रचारक भरत कुमार की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को और विशेष बना दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन और पारंपरिक विधि-विधान के साथ हुआ। इसके पश्चात पंचांग का लोकार्पण किया गया, जिसे उपस्थित लोगों ने अत्यंत श्रद्धा के साथ ग्रहण किया।

अपने संबोधन में जीएम श्रीवास्तव ने सनातन संस्कृति को हमारी अमूल्य धरोहर बताते हुए कहा कि ऐसी पहलें नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का कार्य करती हैं। उन्होंने वैदिक काल गणना जैसी परंपराओं को समाज के सामने लाने के लिए समिति की सराहना की।

इस आयोजन में मनोज केडिया, अभय कुमार घोषाल, संतलाल मित्तल, गोविंद वासुदेव गोस्वामी, शिव शंकर आचार्य, सुरेंद्र गोयल, सुरेंद्र जैन, कमलेश गोयल, गंगारत्न सिंघानिया, रामलखन मिश्रा, पिजुष गनेरिवाल और राजकुमार पांडे सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का समापन पूर्णता मंत्र और जयघोष के साथ हुआ, जिसने पूरे वातावरण को भक्तिमय और उत्साहपूर्ण बना दिया।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

दागदार व्यवस्था

सिस्टम की है। लगभग हर प्रमुख पार्टी के विधायकों पर केस दर्ज हैं। यानी राजनीति में 'साफ छवि' अब अपवाद बनती जा रही है। और सबसे बड़ी चिंता-महिलाओं की भागीदारी सिर्फ 8 प्रतिशत। युवा भी हाशिए पर हैं। क्या यही लोकतंत्र का प्रतिनिधित्व है?

मध्य गुवाहाटी से...

भरमार हो गई। श्री अमरनाथ सेवा समिति की ओर से उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए उनकी जीत की कामना की गई। पूर्वोत्तर हिंदुस्तानी सम्मेलन, वृहत्तर ज्योतिकुची हिंदुस्तानी सम्मेलन, धूपलिया छठ पूजा समिति समेत विभिन्न संगठनों ने उन्हें शुभकामनाएं दी।

योग महोत्सव : योग से स्वस्थ भारत की ओर

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटा

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का काउंट डाउन शुरू हो गया है। गत 17 मार्च को इंस्टीट्यूट ऑफ योगा एंड न्यूट्रिशन साइंसेज द्वारा एसजेएन होमियोपैथिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के सहयोग से योग महोत्सव 2026 का आयोजन किया गया। यह अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का शुभारंभ कहा जा रहा है और इसके बाद से योग दिवस की उल्टी गिनती शुरू हो गई। गुवाहाटी की पावन धरती से कार्यक्रम के जरिए योग की ऊर्जा को एक बार फिर जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया गया। योग महोत्सव 2026 के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के 100 दिन पहले ही स्वास्थ्य, संतुलन और आत्मिक शांति का संदेश दिया जा रहा है।

इस विशेष कार्यक्रम में बताया गया कि योग केवल एक अभ्यास नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है। योग से न केवल शरीर मजबूत होता है, बल्कि मन भी शांत और सकारात्मक बनता है।

कार्यक्रम में योग सेमिनार, योग क्विज, योगासन प्रतियोगिता और योग थेरेपी व्याख्यान जैसे आयोजित हुए।

साप्ताहिक राशिफल

20 से 26 मार्च 2026। विक्रम संवत 2083-**मास** : चैत्र, **पक्ष** : शुक्ल, **तिथि** : द्वितीया

मेष — **इस** सप्ताह ऊर्जा और आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। कार्यक्षेत्र में नए अवसर मिल सकते हैं। पुराने अटके काम पूरे होंगे। परिवार में थोड़ी बहस हो सकती है, संयम रखें। धन लाभ के संकेत हैं।

वृषभ — **आर्थिक** स्थिति मजबूत होगी। निवेश के लिए अच्छा समय है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें, विशेषकर खान-पान में लापरवाही न करें। रिश्तों में मधुरता बनी रहेगी।

मिथुन — **कामकाज** में व्यस्तता बढ़ेगी लेकिन सफलता भी मिलेगी। किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से मुलाकात लाभकारी होगी। छात्रों के लिए अच्छा समय है।

कर्क — **भावनात्मक** रूप से थोड़ा अस्थिर महसूस कर सकते हैं। परिवार का सहयोग मिलेगा। नौकरी में परिवर्तन के योग बन रहे हैं। धैर्य बनाए रखें।

सिंह — **यह** सप्ताह आपके लिए उन्नति का संकेत दे रहा है। नेतृत्व क्षमता बढ़ेगी। व्यापार में लाभ मिलेगा। सामाजिक मान-सम्मान में वृद्धि होगी।

कन्या — **काम** में मेहनत अधिक करनी पड़ेगी, लेकिन परिणाम भी अच्छे मिलेंगे। सेहत में सुधार होगा। पुराने मित्र से मुलाकात संभव है।

तुला — **नए** अवसर आपके दरवाजे पर दस्तक देंगे। प्रेम संबंधों में मजबूती आएगी। खर्चों पर नियंत्रण रखें। यात्रा के योग हैं।

वृश्चिक — **थोड़ी** चुनौतियाँ सामने आ सकती हैं, लेकिन आप उन्हें पार कर लेंगे। परिवार का सहयोग मिलेगा। धन के मामले में सावधानी बरतें।

धनु — **भाग्य** आपका साथ देगा। करियर में प्रगति होगी। किसी नए प्रोजेक्ट की शुरुआत हो सकती है। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा।

मकर — **जिम्मेदारियाँ** बढ़ेंगी। कार्यक्षेत्र में दबाव रहेगा, लेकिन सफलता भी मिलेगी। परिवार के साथ समय बिताने से मन शांत रहेगा।

कुंभ — **रचनात्मक** कार्यों में सफलता मिलेगी। नए विचार लाभ देंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। मित्रों का सहयोग मिलेगा।

मीन — **यह** सप्ताह आपके लिए शुभ संकेत लेकर आया है। आत्मविश्वास बढ़ेगा। धार्मिक या आध्यात्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। धन लाभ के योग हैं।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

21 मार्च 2026 (शनिवार)
सीतारामचन्द्रजी व्रत
गणगौर व्रत (राजस्थान)
सतुआ (बिहार)
22 मार्च 2026 (रविवार)
विनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत
24 मार्च 2026 (मंगलवार)
श्री सूर्यषष्ठी व्रत
श्री स्कन्द षष्ठी व्रत
25 मार्च 2026 (बुधवार)
महाशष्ठी पूजा
26 मार्च 2026 (गुरुवार)
महाअष्टमी व्रत, ब्रह्मपुत्र स्नान
महानवमी व्रत (सायंकाल)

भाग्योदय
●ज्योतिर्विद् आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल
भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

भूपेन और प्रद्युत की सीट भी पक्की

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

राज्य की राजनीति में चुनाव से ठीक पहले बड़ा उलटफेर देखने को मिला, जब भूपेन बोरा और प्रद्युत बरदलै जैसे कद्दावर कांग्रेस नेताओं ने भाजपा का दामन थामते ही टिकट हासिल कर लिया। यह घटनाक्रम केवल दल-बदल नहीं, बल्कि चुनावी रणनीति और सत्ता की राजनीति का स्पष्ट संकेत है।

भूपेन बोरा, जो कभी असम कांग्रेस के अध्यक्ष रहे, और प्रद्युत बरदलै, जो लोकसभा सांसद के रूप में मजबूत पकड़ रखते थे-दोनों का भाजपा में आना पार्टी के लिए 'रेडीमेड राजनीतिक पूंजी' जैसा है। भाजपा ने इन नेताओं को तुरंत टिकट देकर यह दिखा दिया कि उसके लिए जीतने की क्षमता सबसे बड़ा मापदंड है।

मालूम हो कि प्रद्युत बरदलै को भाजपा ने प्रतिष्ठित दिसपुर सीट से मैदान में उतारा है, जबकि भूपेन बोरा को बिहपुरिया सीट से टिकट दिया है।

कांग्रेस के सभी 'अच्छे' नेता भाजपा में होंगे : हिमंत

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि उनकी कोशिश है कि कांग्रेस के सभी 'अच्छे' नेताओं को भाजपा में शामिल किया जाए। उनका कहना है कि इससे असम और भाजपा दोनों का भविष्य मजबूत होगा।

यह बयान उस समय आया जब कांग्रेस के वरिष्ठ नेता प्रद्युत बरदलै ने पार्टी छोड़कर भाजपा ज्वॉइन कर ली। डॉ. शर्मा ने कहा कि 2016 से भाजपा इस दिशा में काम कर रही है और उन्हें इसमें काफी सफलता मिली है। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस की मौजूदा स्थिति ऐसी है कि कोई स्वाभिमानी व्यक्ति वहां नहीं रह सकता।

बराक घाटी में तीन विधायकों की छुट्टी, 10 सीटों पर उतारे उम्मीदवार

जन जन विचार
...✍ जवाहर लाल पांडेय

असम विधानसभा चुनाव को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने 88 सीटों पर अपने उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी है। इस सूची में बराक घाटी की सभी 10 विधानसभा सीटों के लिए उम्मीदवारों के नाम घोषित किए गए हैं। खास बात यह रही कि इस बार भाजपा ने बराक क्षेत्र में तीन मौजूदा विधायकों के टिकट काटकर नए चेहरों को मौका दिया है, जिससे राजनीतिक हलकों में हलचल तेज हो गई है।

सबसे बड़ा बदलाव सिलचर विधानसभा क्षेत्र में देखने को मिला, जहां वर्तमान विधायक दीपायन चक्रवर्ती का टिकट काटकर पूर्व सांसद डॉ. राजदीप राय को मैदान में उतारा गया है। वहीं उधारबंद सीट से विधायक मिहिरकांति सोम को भी पार्टी ने टिकट नहीं दिया और उनकी जगह पूर्व विधायक राजदीप ग्वाला को उम्मीदवार बनाया गया है। धोलाई विधानसभा क्षेत्र में भी बदलाव करते हुए विधायक निहार रंजन दास का नाम सूची से बाहर कर दिया गया है और यहां से अमिय कांति दास को टिकट दिया गया है।

लखीपुर विधानसभा सीट पर स्थिति अलग रही, जहां भाजपा की ओर से केवल मंत्री कौशिक राय ने ही टिकट के लिए आवेदन किया था। पार्टी ने उन पर भरोसा जताते हुए उन्हें ही उम्मीदवार बनाया है। काटीगोड़ा विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुए कमलाक्ष दे पुरकायस्थ को टिकट दिया गया है।

बड़खोला सीट से पूर्व विधायक किशोर नाथ को टिकट दिया गया है, जबकि हैलाकांदी से डॉ. मिलन दास को उम्मीदवार बनाया गया है। श्रीभूमि जिले की पाथरकांदी सीट से मंत्री कृष्णेंदु पाल को फिर से मैदान में उतारा गया है। रामकृष्णनगर से विजय मालाकार को दोबारा टिकट दिया गया है, वहीं उत्तर करीमगंज सीट से सुब्रत भट्टाचार्य को उम्मीदवार बनाया गया है।

पार्टी ने इस बार प्रदर्शन और जीत की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए कई बड़े बदलाव किए हैं।

विस चुनाव : माकपा ने उतारे दो उम्मीदवार

गुवाहाटी। असम विधानसभा चुनाव के लिए मार्क्सवादी कम्यूनिस्ट पार्टी ने दो सीटों पर अपने उम्मीदवार घोषित किए हैं। पार्टी ने भवानीपुर से मौजूदा विधायक मनोरंजन तालुकदार को फिर से मैदान में उतारा है, जबकि बापू राम बोरो को गोरेश्वर सीट से उम्मीदवार बनाया गया है।

अगप ने भी किया 26 उम्मीदवारों के नामों का ऐलान

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम गण परिषद (अगप) ने आगामी 2026 विधानसभा चुनाव के लिए अपने उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी है। पार्टी के केंद्रीय कार्यालय, आमबाड़ी से जारी इस सूची में राज्य के विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों के लिए प्रत्याशियों के नाम घोषित किए गए हैं।

सूची के अनुसार, बोकाखात, कलियाबर, बंगाईगांव, बरपेटा, टियक, डिमोरिया, तेजपुर, बजाली, हाजो-सुवालकुची, शिवसागर, नाउबैचा, बिलासीपाड़ा, सोनाई, दक्षिण करीमगंज, मानकाचर, ग्वालपाड़ा पूर्व, आलगापुर-कटलीचेरा, बिन्नाकांदी, रुपहीघाट, लाहरीघाट, सृजनग्राम, चेंगा, चमरिया, पकाबेतबाड़ी, जलेश्वर और गौरी समेत कुल 26 सीटों पर उम्मीदवार उतारे गए हैं।

पार्टी अध्यक्ष अतुल बोरा ने सूची जारी करते हुए कहा कि अगप इस बार 'एकजुटता, शांति और प्रगति' के अपने मूल मंत्र के साथ चुनाव मैदान में उतर रही है। उन्होंने विश्वास जताया कि पार्टी के उम्मीदवार जनता के बीच मजबूत पकड़ रखते हैं और बेहतर प्रदर्शन करेंगे।

सूची के अनुसार, अगप अध्यक्ष अतुल बोरा बोकाखात से चुनाव लड़ेंगे तो केशव महंत कलियाबर में ताल ठोंकेंगे।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

'अपनों' का बलिदान

बार मौका नहीं मिला। इससे यह स्पष्ट हुआ कि भाजपा अब 'योगदान' से ज्यादा 'जीतने की क्षम' को प्राथमिकता दे रही है। राजनीतिक हलकों में इसे एंटी-इन्कंबेंसी कम करने और संगठन को नया स्वरूप देने की कोशिश माना जा रहा है।

वहीं, पार्टी ने नए और युवा चेहरों पर भरोसा जताते हुए चुनाव में नई ऊर्जा और स्थानीय पकड़ को महत्व दिया है। बराक घाटी, ऊपरी असम और मध्य असम में उम्मीदवार चयन से यह भी संकेत मिलता है कि सामाजिक और क्षेत्रीय संतुलन साधने की रणनीति अपनाई गई है।

इस बार कई नेताओं को उनकी पारंपरिक सीटों से हटाकर नई सीटों पर उतारा गया है। यह कदम भाजपा के लिए 'हाई रिस्क-हाई रिवॉर्ड' जैसा माना जा रहा है। अगर यह प्रयोग सफल रहता है, तो पार्टी को नए क्षेत्रों में बढ़त मिल सकती है, लेकिन असफल होने पर पुराने वोट बैंक में दरार भी पड़ सकती है।

टिकट वितरण के बाद कुछ जगहों पर असंतोष की खबरें भी सामने आई हैं। हालांकि पार्टी इसे नियंत्रित करने में जुटी है, लेकिन अंदरूनी नाराजगी चुनावी समीकरणों को प्रभावित कर सकती है। ऐसे में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि भाजपा इस असंतोष को कितनी प्रभावी ढंग से संभाल पाती है।

पार्टी का लक्ष्य इस बार सिर्फ सरकार बनाना नहीं, बल्कि रिकॉर्ड बहुमत के साथ सत्ता में वापसी करना है। यही कारण है कि उम्मीदवार चयन में कड़े और बड़े फैसले लिए गए हैं।

विपक्ष ने इस सूची को भाजपा की 'अंदरूनी अस्थिरता' करार देते हुए सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि टिकट कटने से पार्टी के भीतर असंतोष बढ़ेगा, जिसका असर चुनाव पर पड़ सकता है।

अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या भाजपा की यह आक्रामक रणनीति उसे फिर सत्ता तक पहुंचाएगी, या टिकट कटने से उपजी नाराजगी चुनाव में नई चुनौती खड़ी करेगी।

यह उम्मीदवार सूची साफ संकेत देती है कि यह चुनाव परंपरा नहीं, बल्कि प्रदर्शन और जीत की क्षमता पर आधारित है। अब अंतिम फैसला मतदाताओं के हाथ में है।

टिकट बंटवारे से पार्टी...

'अगर वरिष्ठों को हटाया जा रहा है, तो क्या जालुकबाड़ी सीट भी नए लोगों के लिए खाली होगी?' इतना ही नहीं, उन्होंने 'राजनीतिक सिंडिकेट' होने का आरोप लगाते हुए नई पार्टी बनाने का ऐलान तक कर दिया।

छह बार के विधायक अतुल बोरा ने भी टिकट वितरण पर नाराजगी जताई। उन्होंने कहा, 'मैंने अपने राजनीतिक जीवन में तीन मुख्यमंत्रियों को हराया, लेकिन पार्टी ने मेरे अनुभव को नजरअंदाज किया।' बोरा ने पार्टी के अंदर 'काम करने का माहौल खत्म' होने और कार्यकर्ताओं में भ्रम की स्थिति पैदा होने की बात कही।

राजनीतिक हलचल केवल भाजपा तक सीमित नहीं रही। पूर्व एनडीए सहयोगी यूपीपीएल को भी झटका लगा, जब बरामा के विधायक भूपेन बोरो ने पार्टी छोड़ दी।

सूत्रों के मुताबिक, उनके बीपीएफ में जाने की अटकलें तेज हैं।

संपादकीय

कांग्रेस संभले या लड़े

असम विधानसभा चुनाव से ठीक पहले कांग्रेस जिस स्थिति में खड़ी है, वह केवल चुनावी चुनौती नहीं बल्कि अस्तित्व की परीक्षा बन चुकी है। प्रद्युत बरदलै और भूपेन बोरा जैसे बड़े चेहरों का पार्टी छोड़ना इस बात का संकेत है कि समस्या सतही नहीं, बल्कि संगठन की जड़ों तक पहुंच चुकी है।

कांग्रेस फिलहाल 'डैमेज कंट्रोल' में उलझी दिख रही है, जबकि उसे आक्रामक चुनावी रणनीति के साथ सत्ता विरोधी लहर को भुनाना चाहिए था। नेतृत्व बैठकों और विचारधारा की बातों से जमीन की हकीकत नहीं बदलती। असल सवाल यह है कि जब अपने ही नेता भरोसा खो रहे हैं, तो जनता क्यों विश्वास करेगी?

पाला बदलने वाले नेताओं को 'अवसरवादी' कहकर घेरना आसान है, लेकिन इससे पहले कांग्रेस को अपने भीतर झांकना होगा। टिकट वितरण में असंतोष, नेतृत्व पर सवाल और कार्यकर्ताओं की उपेक्षा-ये सभी कारण पार्टी को अंदर से कमजोर कर रहे हैं। केवल भाजपा पर आरोप लगाकर इस संकट से बाहर नहीं निकला जा सकता।

हालांकि अभी भी समय पूरी तरह हाथ से नहीं निकला है। अगर कांग्रेस अपने कार्यकर्ताओं को फिर से सक्रिय कर, स्थानीय मुद्दों पर मजबूती से खड़ी होती है और नेतृत्व में स्पष्टता दिखाती है, तो मुकाबला रोचक हो सकता है। लेकिन यदि पार्टी अंदरूनी कलह में ही उलझी रही, तो यह चुनाव एक और हार की कहानी लिख सकता है।

कांग्रेस के लिए यह चुनाव अपनी राजनीतिक साख बचाने का आखिरी बड़ा मौका है।

सुलगता सवाल आपके विचार

राजनीतिक अवसरवाद

चुनाव से ठीक पहले नेताओं का पार्टी बदलना और तुरंत नई पार्टी से टिकट हासिल करना भारतीय राजनीति की एक जटिल और विवादास्पद प्रवृत्ति बन चुकी है।

एक ओर, इसे नेताओं का 'राजनीतिक अधिकार' माना जाता है-वे अपनी विचारधारा, अवसर या भविष्य की संभावनाओं के आधार पर निर्णय लेते हैं। लेकिन दूसरी ओर, यह सवाल उठता है कि क्या यह केवल अवसरवाद नहीं है? जब कोई नेता वर्षों तक एक पार्टी की विचारधारा और कार्यकर्ताओं के साथ खड़ा रहता है और चुनाव आते ही दूसरी पार्टी में शामिल होकर टिकट पा जाता है, तो इससे पार्टी के समर्पित कार्यकर्ताओं का मनोबल टूटता है।

इसके साथ ही मतदाताओं के बीच भी भ्रम की स्थिति पैदा होती है। वे जिस नेता को एक विचारधारा के साथ पहचानते हैं, अचानक उसे विपरीत खेमे में देखकर विश्वास का संकट महसूस करते हैं। इससे राजनीति में सिद्धांतों की बजाय 'जीतने की संभावना' अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

हालांकि, राजनीतिक दल भी इस प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं, क्योंकि वे जीतने वाले चेहरों को प्राथमिकता देते हैं, भले ही वे हाल ही में शामिल हुए हों। यह रणनीति अल्पकालिक लाभ तो दे सकती है, लेकिन दीर्घकाल में संगठन की जड़ों को कमजोर करती है।

अंतत:, यह प्रवृत्ति लोकतंत्र की गुणवत्ता पर प्रश्नचिह्न लगाती है। यदि विचारधारा और निष्ठा की जगह केवल अवसरवाद हावी हो जाए, तो राजनीति का मूल उद्देश्य (जनसेवा) पिछड़ सकता है।

आदिशक्ति की उपासना

जन जन विचार

...✍ डॉ. मुकेश कुमार
हिंदी विभाग,
चौधरी रणबीर सिंह यूनिवर्सिटी
जींद (हरियाणा)

आदिशक्ति मां भगवती की उपासना भारतीय आध्यात्मिक परंपरा का अत्यंत प्राचीन, व्यापक और गूढ़ आयाम है। 'आदिशक्ति' वह मूल ऊर्जा है, जिससे संपूर्ण सृष्टि का उद्भव, पालन और संहार होता है। वे ही प्रकृति हैं, वे ही माया हैं और वे ही ब्रह्म की सगुण अभिव्यक्ति हैं। वेदों, उपनिषदों, पुराणों तथा तंत्रग्रंथों में देवी को सर्वोच्च सत्ता के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। मानव-जीवन के प्रत्येक आयाम में शक्ति का ही संचालन है-चेतना, प्राण, बुद्धि, श्रद्धा, करुणा, सब उसी आदिशक्ति के विविध रूप हैं। अत: उनकी उपासना केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं, बल्कि आत्मा को उसके मूल स्रोत से जोड़ने की साधना है।

शास्त्रों में कहा गया है-

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम:॥

यह श्लोक स्पष्ट करता है कि देवी प्रत्येक जीव में शक्ति रूप में स्थित हैं। उपासना का तात्पर्य बाह्य आराधना के साथ-साथ उस अंतर्निहित शक्ति का जागरण भी है। जब साधक अपने भीतर की शक्तियों-साहस, विवेक, धैर्य और करुणा-को विकसित करता है, तभी वह वास्तविक अर्थों में देवी की उपासना करता है। इस प्रकार यह साधना व्यक्ति को आत्मबोध की दिशा में अग्रसर करती है और जीवन के गूढ़ रहस्यों को समझने की क्षमता प्रदान करती है।

आदिशक्ति की उपासना के विविध रूप हैं-भक्ति, ज्ञान, कर्म और तंत्र। भक्ति मार्ग में साधक पूर्ण समर्पण के साथ देवी के चरणों में श्रद्धा अर्पित करता है। वह मानता है कि समस्त कष्टों का निवारण केवल मां की कृपा से ही संभव है। इस भाव को एक अन्य प्रसिद्ध श्लोक में व्यक्त किया गया है-

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तु ते॥

अर्थात् देवी समस्त मंगलों की अधिष्ठात्री, शिवस्वरूपा और सभी अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाली हैं। 'शरण्ये' शब्द यह संकेत करता है कि जब मनुष्य संसार के क्लेशों से व्याकुल हो जाता है, तब उसे देवी की शरण में जाना चाहिए, क्योंकि वही अंतिम आश्रय हैं। ज्ञान मार्ग में साधक देवी को ब्रह्म के रूप में समझकर आत्मा और परमात्मा के अद्वैत संबंध का अनुभव करता है, जबकि कर्म मार्ग में वह अपने सभी कार्य देवी को समर्पित कर निष्काम भाव से जीवन यापन करता है।

नवरात्रि के पावन अवसर पर आदिशक्ति की उपासना का विशेष महत्व है। इन नौ दिनों में देवी के नौ स्वरूपों की आराधना की जाती है-शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री। ये सभी रूप मानव-जीवन के विभिन्न आध्यात्मिक चरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रारंभिक साधना में स्थिरता (शैलपुत्री), तप (ब्रह्मचारिणी) और साहस (चंद्रघंटा) की आवश्यकता होती है, जबकि मध्य अवस्था में साधक को ऊर्जा, संतुलन और संरक्षण प्राप्त होता है तथा अंतिम अवस्था में वह सिद्धि और पूर्णता (सिद्धिदात्री) को प्राप्त करता है। इस प्रकार नवरात्रि केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि और आत्मोन्नति का पर्व है।

देवी की उपासना में मंत्र-जप, ध्यान, यज्ञ, हवन और स्तोत्र-पाठ का विशेष स्थान है। 'दुर्गा सप्तशती' का पाठ अत्यंत प्रभावकारी माना गया है। इसमें देवी के विभिन्न रूपों और उनके द्वारा असुरों के संहार की कथाएं वर्णित हैं, जो प्रतीकात्मक रूप से मानव के भीतर के दुष्ट गुणों-काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य-के विनाश का संकेत देती हैं। जब साधक इन विकारों पर विजय प्राप्त करता है, तभी वह देवी की कृपा का अधिकारी बनता है।

शास्त्रों में यह भी कहा गया है-

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

यह प्रार्थना केवल भौतिक सुख-संपत्ति की नहीं, बल्कि समग्र कल्याण की अभिलाषा है। 'आरोग्य' शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का प्रतीक है, 'जयं' आत्मविजय का और 'यश' समाज में सम्मान का। 'द्विषो जहि' का अर्थ है शत्रुओं और नकारात्मक शक्तियों का नाश करना, जो अंतत: हमारे भीतर के ही दोष हैं। इस प्रकार देवी की उपासना व्यक्ति के जीवन को संतुलित, समृद्ध और सकारात्मक बनाती है।

आदिशक्ति की उपासना का एक गूढ़ पक्ष यह भी है कि यह साधक को 'अहंकार' से मुक्त करती है। जब वह यह समझ लेता है कि वह स्वयं कुछ नहीं, बल्कि एक दिव्य शक्ति का माध्यम है, तब उसके भीतर विनम्रता, सेवा और करुणा का विकास होता है। यही भाव उसे सच्चे अर्थों में आध्यात्मिक बनाता है। तंत्र परंपरा में भी देवी को 'कुंडलिनी शक्ति' के रूप में माना गया है, जो मानव शरीर में सुप्त अवस्था में विद्यमान रहती है। साधना के माध्यम से जब यह शक्ति जागृत होती है, तब साधक को उच्चतम चेतना, आनंद और ब्रह्मानुभूति का अनुभव होता है।

अंतत: यह कहा जा सकता है कि आदिशक्ति मां भगवती की उपासना केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन की एक संपूर्ण साधना है। यह साधना हमें अपने भीतर की दिव्यता को पहचानने, विकारों से मुक्त होने और आत्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होने का मार्ग दिखाती है। जब मनुष्य पूर्ण श्रद्धा, विश्वास और समर्पण के साथ देवी की आराधना करता है, तब उसके जीवन में शांति, संतुलन, साहस और आनंद का संचार होता है। यही उपासना का परम फल है और यही मानव-जीवन की सच्ची सिद्धि भी है।

(लेखक चौधरी रणबीर सिंह यूनिवर्सिटी,जींद-हरियाणा के हिंदी -विभाग के प्राध्यापक हैं।)

बंगाल में भाजपा को 'अपनों' पर भरोसा

जन जन विचार
...✍ कोलकाता

पश्चिम बंगाल और असम में भाजपा की अलग-अलग रणनीति इस बार के चुनाव को दिलचस्प ही नहीं, बल्कि निर्णायक भी बना रही है। एक तरफ बंगाल में पार्टी ने अपने पुराने, समर्पित कार्यकर्ताओं पर भरोसा जताया है, तो दूसरी ओर असम में प्रद्युत बरदलै और भूपेन बोरा जैसे हाल ही में शामिल हुए नेताओं को टिकट देकर 'विजयी चेहरे' पर दांव लगाया है।

असम में यह रणनीति साफ तौर पर 'इलेक्टोरल इंजीनियरिंग' का हिस्सा है। बाहरी नेता अपने साथ अनुभव, पहचान और वोट बैंक लेकर आते हैं, जिससे कमजोर इलाकों में पार्टी की पकड़ मजबूत हो सकती है। लेकिन इसका दूसरा पहलू भी है-पार्टी के पुराने कार्यकर्ता, जो वर्षों से मेहनत कर रहे थे, खुद को ठगा हुआ महसूस कर सकते हैं। यदि यह असंतोष भीतर ही भीतर बढ़ा, तो यह चुनावी नुकसान में बदल सकता है।

वहीं पश्चिम बंगाल में भाजपा ने 2021 के अनुभव से सीखते हुए 'आयातित नेताओं' की बजाय अपने कैडर को प्राथमिकता दी है। इससे संगठनात्मक एकजुटता तो बढ़ेगी, लेकिन चुनौती यह है कि क्या केवल संगठन के भरोसे ममता बनर्जी जैसी मजबूत और स्थापित नेता को टक्कर दी जा सकती है।

दरअसल, भाजपा की यह रणनीति एक तरह का संतुलन साधने की कोशिश है-जहां जरूरत हो वहां नए चेहरे, और जहां संगठन मजबूत हो वहां अपने लोग। मगर राजनीति में यह संतुलन साधना आसान नहीं होता। जरा-सी चूक दोनों राज्यों में उल्टा असर डाल सकती है।

यह रणनीति तभी सफल होगी जब पार्टी असम में असंतोष को नियंत्रित रखे और बंगाल में अपने कैडर को जीत में बदल सके। अन्यथा, यह 'मास्टरस्ट्रोक' राजनीतिक जोखिम में भी बदल सकता है।

त्रिपुरा ट्राइबल काउंसिल चुनाव

मतदान 13 अप्रैल को चुनावी सरगर्मी तेज

अगरतला। त्रिपुरा ट्राइबल एरियाज ऑटोनॉमस डिस्ट्रिक्ट काउंसिल के चुनाव की तारीखों के ऐलान के साथ ही त्रिपुरा की राजनीति में हलचल तेज हो गई है। राज्य निर्वाचन आयोग ने 13 अप्रैल को मतदान और 17 अप्रैल को मतगणना की घोषणा की है। इसके साथ ही आदर्श आचार संहिता लागू हो चुकी है, जिससे चुनावी गतिविधियों पर सख्त निगरानी शुरू हो गई है।

यह चुनाव केवल स्थानीय निकाय का नहीं, बल्कि आदिवासी राजनीति की दिशा तय करने वाला माना जा रहा है। मौजूदा समय में टिप्रा मोथा पार्टी के पास बहुमत है, जबकि भाजपा मुख्य विपक्षी ताकत के रूप में मौजूद है। ऐसे में यह मुकाबला सीधे तौर पर क्षेत्रीय बनाम राष्ट्रीय राजनीति का भी संकेत देता है।

सुरक्षा के लिहाज से चुनाव को बेहद संवेदनशील माना जा रहा है। 1,257 मतदान केंद्रों में से 311 को अत्यधिक संवेदनशील श्रेणी में रखा गया है और करीब 11,000 सुरक्षाकर्मी तैनात किए जाएंगे। इसके अलावा बांग्लादेश सीमा पर भी निगरानी बढ़ा दी गई है, जो चुनाव की गंभीरता को दर्शाता है।

चुनावी कार्यक्रम भी सघन है- 25 मार्च तक नामांकन, 26 को जांच और 28 मार्च तक नाम वापसी की प्रक्रिया पूरी होगी।

कुल मिलाकर, यह चुनाव त्रिपुरा की जनजातीय राजनीति के भविष्य की दिशा तय करेगा।

बिहार राज्यसभा चुनाव में एनडीए का क्लीन स्वीप

नीतीश कुमार, नितिन नबीन समेत पांचों उम्मीदवार विजयी

जन जन विचार
...✍ पटना

बिहार में राज्यसभा की पांच सीटों के लिए हुए चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने शानदार प्रदर्शन करते हुए सभी पांचों सीटों पर कब्जा कर लिया। इस जीत के साथ मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और भाजपा नेता नितिन नबीन राज्यसभा के लिए निर्वाचित हो गए।

एनडीए के अन्य विजयी उम्मीदवारों में रामनाथ ठाकुर, उपेंद्र कुशवाहा और शिवेश राम शामिल हैं। परिणाम घोषित होते ही एनडीए खेमे में उत्साह का माहौल देखा गया, जबकि महागठबंधन की रणनीति पर गंभीर सवाल उठने लगे हैं।

मतगणना के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और नितिन नबीन को 44-44 वोट प्राप्त हुए। केंद्रीय मंत्री रामनाथ ठाकुर को 42 वोट मिले, जबकि राष्ट्रीय लोक मोर्चा के नेता उपेंद्र कुशवाहा को भी 42 मत प्राप्त हुए।

भाजपा नेता शिवेश राम ने भी जीत दर्ज कर एनडीए की झोली में पांचवीं सीट डाल दी।

वहीं महागठबंधन समर्थित उम्मीदवार ए. डी. सिंह को मात्र 37 वोट ही मिल सके, जिससे विपक्ष की उम्मीदों को बड़ा झटका लगा।

राज्यसभा चुनाव में एक सीट जीतने के लिए 41 वोट आवश्यक थे। लेकिन महागठबंधन के चार विधायक मतदान में शामिल नहीं हुए, जिससे विपक्षी खेमे का पूरा गणित बिगड़ गया।

बताया जा रहा है कि अनुपस्थित विधायकों में कांग्रेस के तीन और राष्ट्रीय जनता दल का एक विधायक शामिल थे। उनकी गैरहाजिरी ने चुनावी समीकरण को पूरी तरह बदल दिया और एनडीए को निर्णायक बढ़त मिल गई।

राजद के ढाका विधायक फैसल रहमान मतदान के समय विधानसभा नहीं पहुंचे। पार्टी नेतृत्व ने उनसे संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन संपर्क नहीं हो सका।

इसी तरह कांग्रेस के तीन विधायक भी मतदान में शामिल नहीं हुए।

सिलचर में रंगों की बहार : हिंदीभाषी महिला मंच का भव्य होली मिलन समारोह

जन जन विचार
...✍ सिलचर

रंगों, उमंग और संस्कृति के संगम के बीच हिंदीभाषी महिला मंच, सिलचर द्वारा विमेंस कॉलेज के सभागार में भव्य होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस रंगारंग कार्यक्रम में गीत-संगीत, नृत्य और पारंपरिक होली गीतों की प्रस्तुतियों ने पूरे माहौल को उत्सवमय बना दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ, जिसके बाद अतिथियों एवं चंग टोली का उत्तरीय ओढ़ाकर सम्मान किया गया। मंच की महामंत्री सीमा कुमार ने अपने संबोधन में मंच की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि संस्था वर्षों से सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रमों के माध्यम से समाज को जोड़ने का कार्य कर रही है।

इस अवसर पर फूलमति कलवार, आनंद शास्त्री, सागर शर्मा, सीमा सिंह राय तथा सुप्रसिद्ध लोक कलाकार मानिक पटवा मंचासीन अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमती सीमा सिंह राय की मधुर गजल से हुई, जिसने सभी को भावविभोर कर दिया। इसके बाद मानिक पटवा और उनकी चंग टोली ने लोकगीत और नृत्य की ऐसी शानदार प्रस्तुति दी कि पूरा सभागार होली के रंग में रंग गया। दर्शक तालियों और नृत्य के साथ उत्साहपूर्वक इस आनंद में शामिल होते नजर आए।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में गायत्री कोइरी, परिणिता शर्मा और नन्ही श्रुति कानू के मनमोहक नृत्य ने खूब सराहना बटोरी। वहीं संकेत कानू और सचेत कानू ने स्वर्गीय जुबिन गर्ग को श्रद्धांजलि स्वरूप उनका लोकप्रिय गीत 'मायाविनी' प्रस्तुत कर माहौल को भावुक बना दिया।

इसके अलावा द्वारिका गुप्ता दंपति, श्रीमती उर्मिला कानू, श्रीमती नीलम गोस्वामी और मीरा यादव की प्रस्तुतियों ने भी कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए और पूरे वातावरण को रंग, संगीत और उमंग से सराबोर कर दिया।

कार्यक्रम की सफलता में डॉ. रीता सिंह और प्रमोद शाह का विशेष सहयोग रहा, जबकि वरिष्ठ पत्रकार दिलीप कुमार ने कुशल मंच संचालन किया।

इस अवसर पर शहर के अनेक गणमान्य नागरिक और महिला मंच की सदस्याएं बड़ी संख्या में उपस्थित रहीं।

23 मार्च : जब तीन वीरों ने हंसते-हंसते दी कुर्बानी

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

भारत की आजादी की कहानी केवल इतिहास नहीं, बल्कि बलिदान, साहस और देशप्रेम की एक प्रेरणादायक गाथा है। इस आजादी के लिए कई वीरों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए, जिनमें भगत सिंह, शिवराम राजगुरु और सुखदेव थापर का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता है।

23 मार्च 1931 का दिन भारतीय इतिहास में 'शहीद दिवस' के रूप में याद किया जाता है, जब इन तीनों युवा क्रांतिकारियों ने हंसते-हंसते फांसी को गले लगा लिया। उस समय उनकी उम्र बहुत कम थी, लेकिन उनके हौसले और देशप्रेम बेहद ऊंचे थे।

इनकी कहानी हमें सिखाती है कि सच्चा देशप्रेम उम्र नहीं देखता। अपने देश और समाज के लिए कुछ करने की भावना ही इंसान को महान बनाती है।

आइए, अब हम इन तीनों अमर शहीदों के जीवन को जानें और उनसे प्रेरणा लें।

इंकलाब की आवाज : भगत सिंह

भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर 1907 को पंजाब के बंगा गांव (अब पाकिस्तान में) हुआ था। उनके पिता और चाचा स्वतंत्रता सेनानी थे, इसलिए घर में देशभक्ति का माहौल था।

बचपन से देशप्रेम : जब भगत सिंह छोटे थे, तब जालियांवाला बाग नरसंहार हुआ। इस घटना ने उनके मन पर गहरा असर डाला। कहा जाता है कि वे उस जगह की मिट्टी अपने साथ घर लेकर आए थे, ताकि उन्हें हमेशा याद रहे कि देश के लिए कुछ करना है।

पढ़ाई और सोच : वे बहुत पढ़ने-लिखने वाले छात्र थे। इतिहास, राजनीति और क्रांति से जुड़ी किताबें पढ़ते थे। वे चाहते थे कि लोग जागरूक हों और अपने अधिकारों के लिए खड़े हों।

साहसिक कार्य : भगत सिंह ने अपने साथियों के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ कई कदम उठाए। उन्होंने सेंट्रल असेंबली में बम फेंका, लेकिन यह बम किसी को मारने के लिए नहीं था-यह एक संदेश था कि भारतीय अब चुप नहीं रहेंगे। वे खुद गिरफ्तार हुए ताकि अदालत में अपनी बात पूरे देश तक पपहुंचा सकें।

अंतिम बलिदान : 23 मार्च 1931 को उन्हें फांसी दी गई। फांसी से पहले भी वे मुस्कुरा रहे थे और 'इंकलाब जिंदाबाद' के नारे लगा रहे थे।

जिसने डर को हराया : वीर राजगुरु

राजगुरु का जन्म 24 अगस्त 1908 को महाराष्ट्र के खेड़ (अब राजगुरुनगर) में हुआ था।

बचपन और स्वभाव : राजगुरु बचपन से ही बहुत निडर थे। उन्हें शारीरिक व्यायाम, दौड़ और हथियार चलाने में रुचि थी। वे जल्दी ही समझ गए कि देश को आजाद कराने के लिए बहादुरी की जरूरत है।

बहादुरी का उदाहरण : राजगुरु एक बेहतरीन निशानेबाज थे। उन्होंने भगत सिंह और सुखदेव के साथ मिलकर अंग्रेज अधिकारी सांडर्स के खिलाफ कार्रवाई की। यह कदम उन्होंने इसलिए उठाया क्योंकि अंग्रेजों ने भारतीयों के साथ बहुत अन्याय किया था।

दोस्ती और विश्वास : राजगुरु अपने दोस्तों के लिए हमेशा खड़े रहते थे। वे खतरे से कभी नहीं डरते थे और हमेशा आगे बढ़कर जिम्मेदारी लेते थे।

शहादत : जब उन्हें पकड़ा गया, तब भी वे बिल्कुल नहीं डरे। 23 मार्च 1931 को उन्हें भी भगत सिंह और सुखदेव के साथ फांसी दी गई।

योजना और जोश के नायक : सुखदेव

सुखदेव का जन्म 15 मई 1907 को पंजाब के लुधियाना में हुआ था। बचपन में ही उनके पिता का देहांत हो गया था, इसलिए उनका पालन-पोषण उनके चाचा ने किया। परिवार में देशभक्ति का माहौल था, जिसने उनके मन में छोटी उम्र से ही देश के लिए कुछ करने की भावना जगा दी।

युवाओं को जागरूक करना : उन्होंने युवाओं को एकजुट करने का काम किया। वे चाहते थे कि हर युवा देश के लिए कुछ करे। उन्होंने कई संगठनों में काम किया और लोगों को जागरूक किया।

योजनाकार : सुखदेव बहुत अच्छे योजनाकार थे। जहां भगत सिंह विचार देते थे और राजगुरु साहस दिखाते थे, वहीं सुखदेव हर काम की योजना बनाते थे।

बलिदान : जब अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार किया, तब भी वे अपने विचारों से बिल्कुल नहीं डरे। उन्होंने जेल में भी अपने सिद्धांतों को नहीं छोड़ा।

23 मार्च 1931 को भगत सिंह और राजगुरु के साथ उन्हें फांसी दे दी गई। वे हंसते-हंसते फांसी पर चढ़ गए और देश के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दे दिया।

प्यारे बच्चों,
नीचे दिए गए चित्र में आपको अपने पसंदीदा रंग भरने हैं। रंग भरते समय इन बातों का ध्यान रखें-
चित्र को ध्यान से देखें और समझें कि इसमें क्या दिखाया गया है।
सही जगह पर सही रंग भरने की कोशिश करें।
रंगों को साफ-सुथरे तरीके से भरें, लाइन के बाहर न जाएं।
कोशिश करें कि रंग हल्के-हल्के और समान रूप से भरें।

शेखचिल्ली के कारनामे

एक बार शेखचिल्ली की मां ने उसे आठ आने का तेल लाने के लिए बाजार भेजा। शेखचिल्ली खुशी-खुशी दुकान पहुंचा और दुकानदार के सामने गिलास बढ़ा दिया।

दुकानदार ने गिलास में छह आने का तेल भरा और बोला, 'बस बेटा, अब गिलास में और तेल डालने की जगह नहीं है।'

यह सुनते ही शेखचिल्ली अकड़ गया। बोला, 'नहीं-नहीं! मुझे पूरे आठ आने का तेल चाहिए।'

दुकानदार झुंझलाकर बोला, 'अरे भई, अब तेल कहां डालूं?'

तभी शेखचिल्ली की 'अकल' चमकी। उसने झट से गिलास उल्टा किया और उसके पेंदे में बने छोटे से गड्ढे की ओर उंगली दिखाकर बोला, 'जो दो आने का तेल बचा है, उसे यहां डाल दो!'

दुकानदार ने जैसे ही वहां तेल डाला, गिलास के ऊपर भरा हुआ सारा छह आने का तेल छपाक! से जमीन पर फैल गया।

शेखचिल्ली निश्चिंत होकर गिलास लेकर घर पहुंच गया।

मां ने पूछा, 'तेल ले आया?'

शेखचिल्ली बोला, हां मां, पूरा आठ आने का!'

यह कहते हुए उसने गिलास सीधा किया, ताकि मां पेंदे में बचा हुआ तेल देख सके।

पर गिलास सीधा होते ही वह थोड़ा-सा तेल भी टपककर नीचे गिर गया।

मां गुस्से से उसे देखती रह गई और शेखचिल्ली मासूमियत से गिलास घूरता रहा- मानो सोच रहा हो कि तेल आखिर गया कहां!

शक्ति, श्रद्धा और साधना का महापर्व नवरात्र

जन जन विचार
...✍ धर्म डेस्क

मां दुर्गा के नौ रूपों की आराधना

भारतीय संस्कृति में नवरात्रि केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि शक्ति, साधना और आत्मशुद्धि का महापर्व है। वर्ष में दो बार आने वाली नवरात्रि में से चैत्र नवरात्रि विशेष महत्व रखती है क्योंकि यह भारतीय नववर्ष की शुरुआत का प्रतीक भी मानी जाती है। नौ दिनों तक भक्त मां दुर्गा के नौ स्वरूपों - नवदुर्गा की आराधना करते हैं और जीवन में सुख, समृद्धि और शक्ति की कामना करते हैं।

हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार देवी दुर्गा ने इसी काल में असुरों के अत्याचार से संसार को मुक्त करने के लिए अपने दिव्य स्वरूपों का प्राकट्य किया था। यही कारण है कि नवरात्रि के नौ दिनों में देवी के नौ रूपों की पूजा की परंपरा चली आ रही है।

नवदुर्गा के नौ रूप

1. मां शैलपुत्री

नवरात्रि का पहला दिन मां शैलपुत्री को समर्पित होता है। हिमालय की पुत्री होने के कारण इन्हें शैलपुत्री कहा जाता है। इनका वाहन वृषभ है और हाथों में त्रिशूल तथा कमल होता है। इनकी पूजा से जीवन में स्थिरता और शक्ति प्राप्त होती है। इस दिन घी का भोग लगाया जाता है।

2. मां ब्रह्मचारिणी

दूसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी की आराधना की जाती है। यह तप, त्याग और साधना की देवी हैं। इनके हाथों में जपमाला और कमंडल होता है। इनकी पूजा से धैर्य और आत्मबल की प्राप्ति होती है। इस दिन शक्कर या पंचामृत का भोग लगाया जाता है।

3. मां चंद्रघंटा

नवरात्रि के तीसरे दिन मां चंद्रघंटा की पूजा होती है। इनके मस्तक पर अर्धचंद्र की घंटा के समान आकृति होती है और वाहन सिंह है। यह शौर्य और वीरता की प्रतीक मानी जाती हैं। इस दिन दूध या खीर का भोग लगाया जाता है।

4. मां कूष्मांडा

चौथे दिन मां कूष्मांडा की पूजा होती है। मान्यता है कि देवी ने अपनी मुस्कान से ब्रह्मांड की रचना की थी। इनके आठ हाथ होते हैं, इसलिए इन्हें अष्टभुजा देवी भी कहा जाता है। इस दिन मालपुआ का भोग लगाया जाता है।

5. मां स्कंदमाता

पांचवें दिन मां स्कंदमाता की आराधना की जाती है। यह भगवान कार्तिकेय की माता हैं और सिंह पर सवार रहती हैं। इनकी पूजा से ज्ञान और मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस दिन केले का भोग लगाया जाता है।

6. मां कात्यायनी

छठे दिन मां कात्यायनी की पूजा की जाती है। ऋषि कात्यायन की तपस्या से इनका जन्म हुआ था। यह दुष्टों के विनाश और धर्म की रक्षा करने वाली देवी मानी जाती हैं। इस दिन शहद का भोग अर्पित किया जाता है।

7. मां कालरात्रि

सातवें दिन मां कालरात्रि की पूजा होती है। यह देवी दुर्गा का उग्र और शक्तिशाली रूप है जो सभी प्रकार के भय और नकारात्मक शक्तियों का नाश करती हैं। इस दिन गुड़ का भोग लगाया जाता है।

8. मां महागौरी

आठवें दिन मां महागौरी की पूजा की जाती है। इनका रूप अत्यंत शांत और उज्ज्वल माना जाता है। इस दिन कन्या पूजन का विशेष महत्व होता है और नारियल का भोग लगाया जाता है।

9. मां सिद्धिदात्री

नवरात्रि के अंतिम दिन मां सिद्धिदात्री की आराधना होती है। यह सभी सिद्धियों और आध्यात्मिक शक्तियों को प्रदान करने वाली देवी हैं। इस दिन हवन और कन्या पूजन के साथ हलवा-चना-पूड़ी का प्रसाद अर्पित किया जाता है।

मां दुर्गा को करना है प्रसन्न तो नवरात्रि में करें दुर्गा सप्तशती का पाठ

जन जन विचार
...✍ धर्म डेस्क

19 मार्च को चैत्र नवरात्रि की प्रतिपदा तिथि है। नवरात्रि के पवित्र दिनों में दुर्गा सप्तशती का पाठ करना अत्यंत शुभ माना जाता है। देवी दुर्गा की कृपा प्राप्त करने और मन की इच्छाओं को पूरा करने के लिए इस पाठ का विशेष महत्व है। लेकिन दुर्गा सप्तशती का संपूर्ण पाठ बहुत विस्तृत है इसलिए हर कोई प्रतिदिन इसका पाठ नहीं कर पाता। धार्मिक परंपरा के अनुसार यह माना जाता है कि यदि आप केवल 7 महत्वपूर्ण श्लोकों का ही पाठ करते हैं तो भी आपको वही फल प्राप्त होता है। ये 7 श्लोक देवी दुर्गा की महिमा, शक्ति और कृपा का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसा विश्वास है कि यदि आप इन श्लोकों का पाठ पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ करते हैं, तो आपके जीवन में सुख, शांति और समृद्धि में वृद्धि होती है।

क्या है दुर्गा सप्तशती पाठ

दुर्गा सप्तशती में कुल 13 अध्याय और 700 श्लोक हैं। ये श्लोक विशेष रूप से देवी दुर्गा के तीन दिव्य रूपों महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती की महिमा और शक्ति का वर्णन करते हैं। प्रत्येक अध्याय का अपना एक विशेष महत्व है और इसमें जीवन में आने वाली विभिन्न समस्याओं का समाधान प्रदान करने की शक्ति है। हालांकि समय की कमी के कारण, हर कोई पूरे 13 अध्यायों का पाठ नहीं कर पाता। ऐसे भक्तों के लिए, शास्त्रों में एक सरल विधि सुझाई गई है। यदि पूरे अध्याय का पाठ करना संभव न हो, तो ऐसा माना जाता है कि यदि केवल 7 विशेष श्लोकों का ही जाप किया जाए, तो भी वही परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

आइए जानते हैं इन 7 प्रमुख श्लोकों के बारे में।

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तो: स्वस्थै: स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य दु:ख भयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकार करणाय सदार्द्रचित्ता।।

सर्वमङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तु ते॥

शरणागत दीनार्तपरित्राण परायणे
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते॥

सर्वस्वरुपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तु ते॥

रोगानशेषानपंहसि तुष्टारुष्टा तु कामान्
सकलानभीष्टान।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता हि आश्रयतां प्रयान्ति॥

सर्वबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यम् अस्मद् वैरि विनाशनम्॥

विकसित भारत के निर्माण में लोक भवन, असम की प्रेरक पहल

जन जन विचार
...✍ श्री एस.एस. मीनाक्षी सुंदरम, आई.ए.एस.

सेवा संकल्प सप्ताह

भारतवर्ष आज एक ऐतिहासिक संक्रमण काल से गुजर रहा है। स्वतंत्रता के अमृतकाल में खड़ा यह राष्ट्र भविष्य के विराट लक्ष्य की ओर अग्रसर है। माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा वर्ष 2047 तक 'विकसित भारत' के निर्माण का जो संकल्प प्रस्तुत किया गया है, वह केवल आर्थिक प्रगति का स्वप्न नहीं है, वह सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक आत्मविश्वास, सुशासन, नैतिक पुनर्जागरण और जनभागीदारी का व्यापक राष्ट्रीय अभियान है।

इसी राष्ट्रीय दृष्टि को धरातल पर साकार करने की दिशा में असम के माननीय राज्यपाल लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी की प्रेरणा से लोक भवन, असम द्वारा आयोजित 'सेवा संकल्प सप्ताह' एक अनूठी और दूरदर्शी पहल के रूप में सामने आया है। यह पहल दर्शाती है कि यदि लोक भवन जैसी संवैधानिक संस्था भी लोक सेवा के सक्रिय केंद्र के रूप में कार्य करे, तो शासन और समाज के बीच संवाद और सहयोग की नई ऊर्जा उत्पन्न हो सकती है।

भारतीय संस्कृति में 'सेवा परमो धर्म:' जीवन की साधना है। हमारे पुराणों, महाकाव्यों और संत परंपरा ने सेवा को ही सर्वोच्च धर्म बताया है। सेवा संकल्प सप्ताह इसी शाश्वत मूल्य का समकालीन रूपांतरण था। 21 से 27 फरवरी तक राज्य भर में आयोजित इस सप्ताह ने स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता, युवा जागरण, नारी सशक्तिकरण, नशा मुक्ति, राष्ट्र प्रथम की भावना और वैदिक ज्ञान दर्शन – इन सभी आयामों को एक सूत्र में पिरोकर समग्र विकास की अवधारणा को जीवंत किया।

विकसित भारत की संकल्पना केवल आधारभूत ढांचे, उद्योग और प्रौद्योगिकी तक सीमित नहीं हो सकती। यदि विकास को स्थायी और मानवीय बनाना है, तो उसे सेवा, संस्कार और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ना होगा। लोक भवन की यह पहल इसी समग्र सोच का परिणाम है।

सेवा संकल्प सप्ताह का शुभारंभ 'विकसित भारत एवं युवा' विषय पर केंद्रित कार्यक्रम से हुआ। युवाओं के बिना किसी भी राष्ट्र का भविष्य सुरक्षित नहीं हो सकता। लोक भवन द्वारा आयोजित निबंध, वाद-विवाद और पोस्टर प्रतियोगिताओं ने विद्यार्थियों को राष्ट्र निर्माण पर गंभीर चिंतन का अवसर दिया। नई शिक्षा नीति 2020 का मूल उद्देश्य भी यही है कि शिक्षा नवाचार, शोध, कौशल और चरित्र का विकास करे। विकसित भारत का स्वप्न तभी साकार होगा जब युवा वर्ग तकनीकी दक्षता के साथ-साथ नैतिक मूल्यों से भी संपन्न हो। सेवा संकल्प सप्ताह ने युवाओं को यह संदेश दिया कि राष्ट्र निर्माण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, अपितु प्रत्येक विद्यार्थी का भी दायित्व है।

दूसरे दिन रक्तदान शिविर आयोजित की गई। भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी की सहभागिता से आयोजित इस शिविर में युवाओं, अधिकारियों और नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

रक्तदान को 'महादान' कहा जाता है, क्योंकि यह जीवन का अमूल्य उपहार देता है। यह सेवा का ऐसा रूप है, जिसमें दाता और प्राप्तकर्ता के बीच कोई भेद नहीं रहता, केवल मानवता का संबंध रह जाता है। विकसित समाज वही है, जहां नागरिक संकट की घड़ी में एक-दूसरे के लिए आगे आते हैं। रक्तदान शिविर ने असम में स्वैच्छिक सेवा की संस्कृति को सुदृढ़ करने का संदेश दिया।

तीसरे दिन स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया गया। महात्मा गांधी ने स्वच्छता को स्वतंत्रता से भी अधिक महत्वपूर्ण बताया था। उसी विचार को आगे बढ़ाते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व में चल रहा स्वच्छ भारत अभियान आज जनांदोलन का रूप ले चुका है।

लोक भवन द्वारा आयोजित स्वच्छता अभियान में श्रमिक बंधुओं और स्वेच्छासेवियों की सहभागिता ने यह सिद्ध किया कि स्वच्छता सामूहिक जिम्मेदारी है। स्वच्छ परिवेश ही स्वस्थ समाज की आधारशिला है। विकसित भारत का मार्ग स्वच्छ और अनुशासित नागरिक जीवन से होकर गुजरता है।

चौथे दिन स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के सहयोग से गुवाहाटी के जहाजघाट प्राथमिक विद्यालय में आयोजित इस शिविर में मरीजों की जांच करने के साथ-साथ उन्हें नि:शुल्क दवाइयां उपलब्ध कराई गईं। इस शिविर से 200 से अधिक मरीज लाभान्वित हुए। इस दौरान माननीय राज्यपाल ने दिव्यांगजनों को ह्विल चेयर और टीबी मरीजों के परिचारकों (केयर-टेकर) को निक्षय मित्र पहल के अंतर्गत फूड बास्केट प्रदान किए।

आज के समय में नशा युवा पीढ़ी के लिए गंभीर चुनौती बनकर उभरा है। पांचवें दिन इसी विषय पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में युवाओं को संयम, आत्मनियंत्रण और सकारात्मक जीवनशैली का संदेश दिया गया। खेल, योग, ध्यान और कौशल विकास पर विशेष बल प्रदान किया गया। यह रेखांकित किया गया कि स्वस्थ और अनुशासित युवा ही विकसित भारत की रीढ़ हैं। परिवार, समाज और प्रशासन की संयुक्त प्रयास ही नशा मुक्ति से छुटकारा दिला सकता है।

छठे दिन किशोरी सशक्तिकरण को समर्पित रहा। किसी भी समाज की प्रगति का मापदंड उसकी महिलाओं की स्थिति से तय होता है। 'बेटी बचाओ, बेटी बढ़ाओ' जैसे अभियानों ने देश में सकारात्मक परिवर्तन की नींव रखी है।

किशोरी सशक्तिकरण कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा, कौशल विकास, स्वास्थ्य और आत्मरक्षा पर विशेष बल दिया गया। आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता से युक्त नारी ही सशक्त समाज का निर्माण कर सकती है। विकसित भारत का लक्ष्य तभी पूर्ण होगा जब हमारी बेटियां शिक्षा, विज्ञान, प्रशासन और उद्यमिता के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाएंगी।

सातवें दिन 'राष्ट्र प्रथम' विषयक कार्यक्रम ने नागरिकों को यह स्मरण कराया कि व्यक्तिगत हित से ऊपर राष्ट्रहित है। भारतीय सेना, भारतीय नौसेना और भारतीय वायु सेना के वीर जवानों के त्याग और बलिदान का स्मरण करते हुए युवाओं को कर्तव्यनिष्ठ जीवन का संदेश दिया गया। राष्ट्र निर्माण केवल नीतियों और योजनाओं से संभव नहीं, इसके लिए नागरिक अनुशासन, ईमानदारी और संविधान के प्रति आस्था आवश्यक है। 'राष्ट्र प्रथम' की भावना विकसित भारत की आधारशिला है।

सेवा संकल्प सप्ताह का समापन 'भारतीय परंपरा में वैदिक ज्ञान का महत्व' विषयक सम्मेलन से हुआ। ऋग्वेद सहित वेदों और उपनिषदों की शिक्षाओं ने जीवन में संतुलन, समरसता और नैतिकता का मार्ग दिखाया है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' जैसे मंत्र आज भी वैश्विक संदर्भ में प्रासंगिक हैं।

लोक भवन, असम ने सेवा संकल्प सप्ताह के माध्यम से यह सिद्ध किया कि लोकभवन लोक कल्याण का केंद्र भी बन सकता है। राज्यपाल लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी की प्रेरणा में यह पहल शासन और समाज के बीच सशक्त सेतु का कार्य कर रही है। राज्यपाल का स्पष्ट मत है कि विकसित भारत का निर्माण सेवा से ही संभव है। यह पहल असम में नागरिक चेतना का विस्तार कर रही है।

विकसित भारत का लक्ष्य नीतियों, संसाधनों और योजनाओं से आगे बढ़कर नागरिकों की मानसिकता में परिवर्तन की मांग करता है। सेवा संकल्प सप्ताह ने असम में उसी परिवर्तन की शुरुआत की है। यह पहल दर्शाती है कि जब सोच दूरदर्शी हो, संकल्प स्पष्ट हो और समाज सहभागी बने, तब परिवर्तन अवश्यंभावी होता है।

असम से उठी यह सेवा की ज्योति विकसित भारत के पथ को आलोकित कर रही है। लोक भवन की यह पहल विकास की गति प्रदान करने के साथ-साथ विरासत को भी आगे बढ़ा रही है। मूलत: सेवा, संस्कार और संकल्प से ही विकसित भारत का वृहद लक्ष्य पूर्ण होगा।

हाहाकार : रियाद-कतर तक गूंजी जंग की आंच

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

मध्य पूर्व में जारी भीषण संघर्ष अब वैश्विक ऊर्जा संकट में बदलता नजर आ रहा है। ईरान के विशाल पार्स गैस क्षेत्र पर हमले के बाद हालात तेजी से बिगड़े हैं। जवाबी कार्रवाई में ईरान ने सऊदी अरब और कतर की ओर मिसाइलें दागकर जंग को नए और खतरनाक चरण में पहुंचा दिया है।

सऊदी अरब की राजधानी रियाद में धमाकों की गूंज सुनाई दी, हालांकि कई बैलिस्टिक मिसाइलों को हवा में ही मार गिराया गया। इसके बावजूद पूरे खाड़ी क्षेत्र में तनाव चरम पर है और तेल-गैस प्रतिष्ठान सीधे निशाने पर आ गए हैं।

इस संघर्ष का सबसे बड़ा असर वैश्विक बाजार पर पड़ा है। कच्चे तेल की कीमतें छह प्रतिशत से अधिक उछलकर 110 डॉलर प्रति बैरल के पार पहुंच गई हैं, जबकि दुनिया भर के शेयर बाजारों में गिरावट दर्ज की गई है। ऊर्जा आपूर्ति बाधित होने का खतरा गहराने से कई देशों की अर्थव्यवस्था पर दबाव बढ़ गया है।

ईरान ने साफ चेतावनी दी है कि सऊदी अरब, यूएई और कतर के प्रमुख तेल व गैस प्रतिष्ठान अब उसके 'वैध लक्ष्य' हैं। वहीं, कतर और यूएई ने गैस फील्ड पर हमले की कड़ी निंदा करते हुए इसे वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बताया है।

स्थिति को और गंभीर बनाते हुए होर्मुज जलडमरूमध्य पर संकट गहरा गया है, जहां से दुनिया के लगभग 20 प्रतिशत तेल और एलएनजी की आपूर्ति होती है। यदि यह मार्ग पूरी तरह बाधित होता है, तो वैश्विक ऊर्जा संकट और भी विकराल रूप ले सकता है।

उधर, लेबनान में भी इजरायल ने हमले तेज कर दिए हैं, जिससे क्षेत्रीय तनाव कई मोर्चों पर फैल गया है।

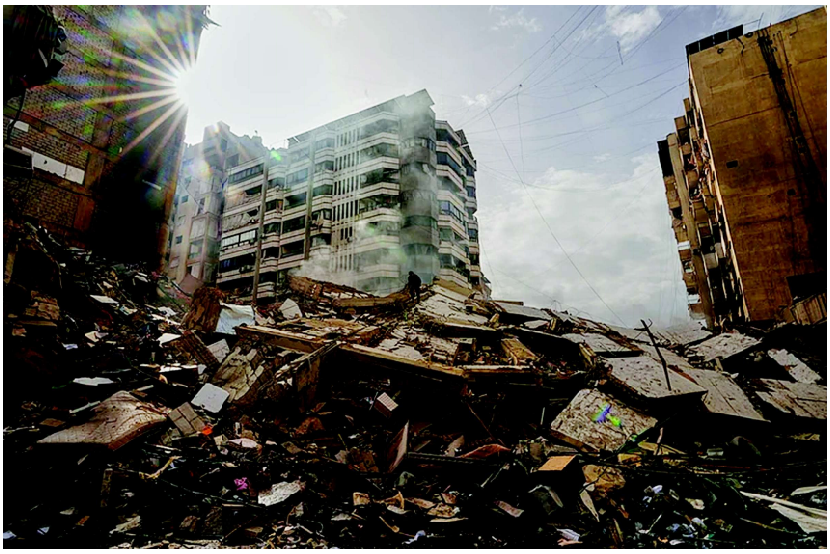

बेरूत के दहियेह इलाके में इजरायली हवाई हमले के बाद मलबे पर खड़ा एक शख्स-चारों ओर धुआं और तबाही, जो जंग की दर्दनाक हकीकत बयां करती है।

अफगान अस्पताल पर हवाई हमला, 408 मौतें

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

अफगानिस्तान की राजधानी काबुल एक भीषण त्रासदी का गवाह बनी, जब पाकिस्तान के हवाई हमले में एक बड़े नशा मुक्ति अस्पताल को निशाना बनाया गया। इस हमले में 408 लोगों की मौत और 265 के घायल होने की खबर है, जिससे पूरे क्षेत्र में तनाव चरम पर पहुंच गया है।

इस हमले में काबुल स्थित दो हजार बिस्तरों वाले ओमिद अस्पताल का भवन पूरी तरह ध्वस्त हो गया। बमबारी के बाद आग और मलबे में फंसे लोगों को निकालने में राहत दलों को घंटों मशक्कत करनी पड़ी। कई लोग जहां थे, वहीं मारे गए-जिससे तबाही का अंदाजा लगाया जा सकता है।

पाकिस्तान-तालिबान टकराव

अफगानिस्तान की तालिबान सरकार ने इस हमले को 'निर्दोष नागरिकों पर सीधा हमला' बताया है। वहीं पाकिस्तान ने इन दावों को खारिज करते हुए कहा कि उसका निशाना आतंकियों के ठिकाने थे, न कि कोई अस्पताल।

दुबई का पर्यटन ठप व्यापार भी संकट में

जन जन विचार
...✍ दुबई

मध्य पूर्व में जारी इजरायल-ईरान संघर्ष का असर अब दुबई जैसे वैश्विक पर्यटन और व्यापारिक केंद्र पर साफ दिखाई देने लगा है। पिछले करीब 15 दिनों से दुबई का पर्यटन

इजरायल-ईरान युद्ध का असर

क्षेत्र लगभग ठप हो गया है, जिससे होटल इंडस्ट्री और कारोबार दोनों पर गहरा असर पड़ा है।

फरवरी के अंत में अमेरिका और इजरायल द्वारा ईरान पर किए गए हमलों के बाद हालात बिगड़े हैं। इसके चलते कई उड़ानें रद्द हुई और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या में भारी गिरावट आई है।

फॉर्च्यून ग्रुप ऑफ होटल्स के चेयरमैन प्रवीण शेट्टी, जो पिछले 35 वर्षों से दुबई में रह रहे हैं, ने इस स्थिति को अभूतपूर्व बताया। उनके अनुसार, कोविड-19 के समय वैश्विक असर था, लेकिन मौजूदा संकट अनिश्चितता से भरा हुआ है, जिससे पर्यटन पूरी तरह प्रभावित हुआ है।

होटल उद्योग पर इसका सबसे ज्यादा असर पड़ा है। कई होटलों में ऑक्यूपेंसी घटकर 30 प्रतिशत तक रह गई है, जबकि कुछ जगहों पर यह 20 प्रतिशत से भी नीचे पहुंच चुकी है। खर्च कम करने के लिए कई मंजिलें और कमरे बंद करने पड़े हैं।

दुबई के प्रमुख कारोबारी इलाकों, जैसे वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, में भी सन्नाटा देखने को मिल रहा है। जहां पहले भारी भीड़ होती थी, वहां अब मेहमानों की कमी से कई फ्लोर खाली पड़े हैं।

विश्व यात्रा एवं पर्यटन परिषद के अनुसार, मध्य पूर्व का पर्यटन क्षेत्र हर दिन करीब 600 मिलियन डॉलर का नुकसान झेल रहा है। यदि यह संघर्ष लंबा चलता है, तो विशेषज्ञों के मुताबिक सालाना आधार पर 11 से 27 प्रतिशत तक गिरावट आ सकती है।

जन जन की बात जन जन तक
जन जन विचार साप्ताहिक
RNI Regd No. ASMUL/25/A2367

Head Office : Golapi Market, 1st Floor, Beltola, Guwahati 781029
Branch Office : JanJan Vichar, GMCH Road, Harbala Market, Bhangagarh, Guwahati - 781005
Contact : 69001 26012
Email: official.janjanvichar@gmail.com
Website: WWW.janjanvichar.in

ग्राहक सदस्यता फॉर्म

ग्राहक विवरण

पूरा नाम : ....
पूरा पता : ....
....
मोबाइल : .... ह्वाट्सएप ....
ई-मेल (यदि हो) : ....

सदस्यता विवरण
अवधि : 1 वर्ष शुल्क : रु. 500/- मात्र

सदस्यता के साथ विज्ञापन लाभ
- सालभर (52 अंक) का अखबार नि:शुल्क मिलेगा
- एक नि:शुल्क विज्ञापन (10 सेमी. x 3 कॉलम)
- विज्ञापन प्रकाशन की तिथि ग्राहक की सुविधा अनुसार

भुगतान विवरण
☐ यूपीआई ☐ बैंक ट्रांसफर

Bank Details
JAN JAN VICHAR
Bank : HDFC, Branch : Guwahati
A/C No. 50200116979015
IFSC : HDFC0000264

इस क्यूआर कोड को स्कैन कर जन जन विचार के बैंक खाते में सीधे भुगतान कर सकते हैं।

(कृपया उपरोक्त में किसी एक माध्यम से ही भुगतान करें।)
भुगतान तिथि : .... रसीद संख्या:..............

घोषणा

मैं स्वेच्छा से जन जन विचार साप्ताहिक अखबार की एक वर्ष की सदस्यता ग्रहण करता/करती हूँ एवं सभी शर्तों से सहमत हूँ।

ग्राहक के हस्ताक्षर : तिथि :

कार्यालय उपयोग हेतु

सदस्यता क्रमांक: .... भुगतान प्राप्त रसीद संख्या:............ प्राप्तकर्ता का नाम : ....
तिथि : .... हस्ताक्षर : ....

बिहू से पहले दसवीं बोर्ड का रिजल्ट

राज्य के 4.38 लाख विद्यार्थियों का इंतजार खत्म होने के करीब

जन जन विचार
...✍ गुवाहाटी

असम के लाखों विद्यार्थियों के लिए राहत भरी खबर है। इस वर्ष हाईस्कूल (एचएसएलसी) परीक्षा के परिणाम रंगाली बिहू से पहले घोषित किए जाने की संभावना है। असम राज्य विद्यालय शिक्षा बोर्ड ने मूल्यांकन कार्य को तेज कर दिया है और यह प्रक्रिया अब अंतिम चरण में पहुंच चुकी है।

बोर्ड के परीक्षा नियंत्रक नयन ज्योति शर्मा ने बताया कि इस वर्ष 4.38 लाख से अधिक विद्यार्थियों ने परीक्षा दी, जो अब तक का सर्वाधिक आंकड़ा है। इसके बावजूद लगभग 95 प्रतिशत उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन पूरा कर लिया गया है।

राज्यभर के 45 मूल्यांकन केंद्र शेष कार्य को शीघ्र पूरा करने में जुटे हैं। अनुमान है कि परिणाम मार्च के अंत तक या अधिकतम अप्रैल के प्रथम सप्ताह में घोषित कर दिए जाएंगे। उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष परिणाम 11 अप्रैल को जारी हुए थे।

अधिकारियों के अनुसार, समय से पहले परिणाम घोषित करने का उद्देश्य विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में प्रवेश के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करना है। हालांकि, अंतिम घोषणा से पहले अनुपस्थित विद्यार्थियों का सत्यापन और अन्य तकनीकी प्रक्रियाएं पूरी की जानी बाकी हैं।

इस वर्ष हाईस्कूल परीक्षाएं 10 फरवरी से 27 फरवरी तक राज्य के 1046 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित की गई थीं।

बदलेंगी एनसीआरटी की किताबें

नई दिल्ली । स्कूल शिक्षा में बड़े बदलाव के तहत एनसीईआरटी ने नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार पाठ्यक्रम और किताबों को लेकर अहम जानकारी दी है। इसके मुताबिक कक्षा 10 और 11 के लिए नई किताबें सत्र 2027-28 से लागू होंगी, जबकि 2026-27 सत्र में इन कक्षाओं के छात्र पुरानी किताबों से ही पढ़ाई जारी रखेंगे। एनसीईआरटी ने बताया कि बदलाव चरणबद्ध तरीके से लागू किए जा रहे हैं।

केंद्रीय विद्यालयों में दाखिले का आधिकारिक नोटिफिकेशन जल्द

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

देशभर के लाखों अभिभावकों के लिए बड़ी खबर है। केंद्रीय विद्यालय संगठन (केवीएस) जल्द ही शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए कक्षा 1 से 9 और 11 तक के एडमिशन का आधिकारिक नोटिफिकेशन जारी करने जा रहा है। इसके बाद ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू होगी।

केंद्रीय विद्यालय संगठन ने संकेत दिया है कि एडमिशन से जुड़ी पूरी जानकारी जल्द ही आधिकारिक वेबसाइट पर जारी की जाएगी। हर साल की तरह इस बार भी बड़ी संख्या में आवेदन आने की उम्मीद है।

प्रवेश प्रक्रिया पूरी तरह ऑनलाइन होगी। अभिभावकों को आवेदन फॉर्म भरना होगा और जरूरी दस्तावेज अपलोड करने होंगे। कक्षा 1 में प्रवेश लॉटरी सिस्टम (ड्रॉ ऑफ लॉट्स) के माध्यम से किया जाएगा, जिसमें किसी तरह की परीक्षा या इंटरव्यू नहीं होता।

वहीं कक्षा 2 से 9 और 11 में एडमिशन सीटों की उपलब्धता पर निर्भर करेगा। कुछ मामलों में लिखित परीक्षा या मेरिट के आधार पर चयन किया जा सकता है।

अधिसूचना में पात्रता से जुड़ी सभी जानकारी दी जाएगी। कक्षा 1 के लिए आयु सीमा तय होगी और जन्म प्रमाण पत्र सहित अन्य दस्तावेज जरूरी होंगे।

हिंदी मीडियम से नीट की तैयारी

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

नीट यूजी 2026 की परीक्षा नजदीक है और ऐसे में हिंदी मीडियम के कई छात्र भाषा को लेकर चिंतित रहते हैं। अक्सर यह धारणा बनी रहती है कि इंग्लिश मीडियम के छात्र ही इस परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हैं, लेकिन सच्चाई इससे अलग है। सही रणनीति और मजबूत कॉन्सेप्ट के साथ हिंदी मीडियम के छात्र भी शानदार सफलता हासिल कर सकते हैं।

नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा नीट यूजी 2026 परीक्षा का आयोजन संभवत: 3 मई 2026 को किया जाएगा। रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया पहले ही बंद हो चुकी है, ऐसे में अब तैयारी का समय बेहद महत्वपूर्ण है।

सही रणनीति दिलाएगी सफलता

सबसे जरूरी बात यह है कि नीट में भाषा नहीं, बल्कि कॉन्सेप्ट मायने रखते हैं। फिजिक्स, केमिस्ट्री और बायोलॉजी के सवाल आपकी समझ और एप्लिकेशन को जांचते हैं। इसलिए किसी भी टॉपिक को गहराई से समझना सफलता की कुंजी है।

आज के डिजिटल दौर में हिंदी मीडियम छात्रों के लिए संसाधनों की कोई कमी नहीं है। यूट्यूब और अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर हिंदी में बेहतरीन लेक्चर और नोट्स उपलब्ध हैं। इनका सही उपयोग करके तैयारी को मजबूत बनाया जा सकता है।

हालांकि, परीक्षा की भाषा को देखते हुए कुछ बेसिक इंग्लिश टर्म्स की समझ जरूरी है। जैसे cell, enzyme, velocity जैसे शब्दों से परिचित होना चाहिए, ताकि प्रश्नों को समझने में कोई दिक्कत न हो।

प्रैक्टिस भी उतनी ही जरूरी है। पिछले वर्षों के प्रश्नपत्र हल करना और नियमित रूप से मॉक टेस्ट देना आत्मविश्वास बढ़ाता है और परीक्षा के पैटर्न को समझने में मदद करता है।

इसके साथ ही एक सही डेली रूटीन बनाना और लगातार रिवीजन करना बेहद जरूरी है। कमजोर टॉपिक्स पर ज्यादा ध्यान देना और नियमित अभ्यास करना ही सफलता की ओर ले जाता है।

कुल मिलाकर, अगर आपकी तैयारी मजबूत है और कॉन्सेप्ट क्लियर हैं, तो भाषा कभी भी आपकी सफलता में बाधा नहीं बन सकती।

नौसेना की अग्निवीर में भर्ती प्रक्रिया शुरू

जन जन विचार
...✍ नई दिल्ली

भारतीय नौसेना ने अग्निवीर एसएसआर और एमआर (01/2027 व 02/2027 बैच) के लिए भर्ती प्रक्रिया शुरू कर दी है। 10वीं और 12वीं पास युवा इस भर्ती में आवेदन कर सकते हैं। आवेदन ऑनलाइन किए जा रहे हैं।

महत्वपूर्ण तिथियां

आवेदन शुरू : 14 मार्च 2026
आवेदन की अंतिम तिथि : 6 अप्रैल 2026
करेक्शन विंडो : 10-11 अप्रैल 2026
स्टेज-I परीक्षा : मई 2026
परिणाम : मई-जून 2026

शैक्षिक योग्यता

अग्निवीर SSR (Senior Secondary Recruit) : 12वीं पास (मैथ्स और फिजिक्स के साथ) कम से कम 50 प्रतिशत अंक या Mechanical / Electrical / Automobile / Computer Science / IT आदि में 3 साल का डिप्लोमा

अग्निवीर (Matric Recruit) 10वीं पास उम्मीदवार आवेदन कर

रोजी-रोजगार

सकते हैं।

आयु सीमा (01/2027 बैच)
जन्म : 1 दिसंबर 2004 - 31 मई 2009
(02/2027 बैच) : जन्म : 1 मई 2005 - 31 अक्टूबर 2009

फिजिकल फिटनेस टेस्ट (पीएफटी)

पुरुष उम्मीदवार : 1600 मीटर दौड़ (6 मिनट 30 सेकेंड), 20 स्क्वैट्स (उठक-बैठक), 15 पुश-अप्स, 16 सिट-अप्स

महिला उम्मीदवार : 1600 मीटर दौड़ (8 मिनट), 15 स्क्वैट्स, 10 पुश-अप्स, 10 सिट-अप्स

केवल पीएफटी पास करने वाले उम्मीदवार स्टेज-II के लिए योग्य होंगे।

आवेदन शुल्क

सभी वर्गों के लिए : 550 रुपए
भुगतान माध्यम : डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, नेट बैंकिंग

आवेदन कैसे करें

आधिकारिक वेबसाइट www.joinindiannavy.gov.in या agniveer.navydmpr.in पर जाएं। Register पर क्लिक करके नया रजिस्ट्रेशन करें। ईमेल, मोबाइल नंबर और अन्य जानकारी भरें। लॉगिन करके आवेदन फॉर्म भरें। फोटो (10-50 KB) और हस्ताक्षर अपलोड करें। आवेदन शुल्क जमा करें। फॉर्म का प्रिंटआउट सुरक्षित रखें।

खेल के साथ पढ़ाई भी जरूरी, पीवी सिंधू की सलाह

जन जन विचार
...✍ स्पोर्ट्स डेस्क

खेल की चमक, मेडल की चमक से कहीं ज्यादा स्थायी होती है शिक्षा की रोशनी-और यही संदेश दिया है भारत की दिग्गज बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू ने।

गुरुग्राम में एक कार्यक्रम के दौरान सिंधू ने साफ शब्दों में कहा, 'आप पूरी जिंदगी खेल नहीं सकते, लेकिन पढ़ाई हमेशा आपके साथ रहती है।' यह सिर्फ एक सलाह नहीं, बल्कि उनके अपने अनुभवों से निकला हुआ निष्कर्ष है। पीवी सिंधू ने इस बात पर जोर दिया कि खेल का करियर सीमित होता है। खिलाड़ी चाहे कितना भी बड़ा क्यों न बन जाए, एक समय ऐसा आता है जब उसे खेल से विदा लेना पड़ता है।

इसके विपरीत, शिक्षा जीवनभर साथ रहती है और हर परिस्थिति में सहारा देती है। इसलिए उन्होंने युवाओं को स्पष्ट संदेश दिया कि केवल खेल पर निर्भर रहना जोखिम भरा हो सकता है। सिंधू का मानना है कि खेल और पढ़ाई को साथ लेकर चलना ही सही रास्ता है। उन्होंने कहा कि मेहनत खेल में भी उतनी ही जरूरी है जितनी पढ़ाई में। कोई भी व्यक्ति तैयार होकर पैदा नहीं होता। दोनों क्षेत्रों में निरंतर प्रयास ही सफलता दिलाता है।

उन्होंने खुद इसका उदाहरण पेश किया है-कठिन ट्रेनिंग के बावजूद उन्होंने एमबीए की पढ़ाई पूरी की।

हॉकी विश्व कप में होगी भारत-पाक की भिड़ंत

जन जन विचार
...✍ स्पोर्ट्स डेस्क

हॉकी प्रेमियों के लिए इस साल का सबसे बड़ा मुकाबला तय हो चुका है। आगामी हॉकी विश्व कप में भारत और पाकिस्तान एक ही ग्रुप में आमने-सामने होंगे, जिससे रोमांच अपने चरम पर पहुंच गया है। इस टूर्नामेंट का आयोजन अगस्त में नीदरलैंड और बेल्जियम में होगा, जहां दुनिया की टॉप टीमें खिताब के लिए भिड़ेंगी।

ड्रॉ समारोह एम्स्टर्डम के वैगेनर स्टेडियम में आयोजित हुआ, जहां दोनों चिर-प्रतिद्वंद्वी टीमों को एक ही समूह में रखा गया।

भारतीय टीम की कमान हरमनप्रीत सिंह के हाथों में है, और हालिया फॉर्म को देखते हुए टीम आत्मविश्वास से भरी हुई है। एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी 2024 में पाकिस्तान पर 2-1 की जीत ने भारत का मनोबल और मजबूत किया है।

इस ग्रुप में भारत और पाकिस्तान के अलावा इंग्लैंड और वेल्स जैसी मजबूत टीमें भी शामिल हैं। सभी मुकाबले एम्स्टर्डम में खेले जाएंगे, जिससे हर मैच बेहद चुनौतीपूर्ण होने वाला है।

दिलचस्प बात यह है कि दोनों टीमें विश्व कप से पहले जून में प्रो लीग के तहत इंग्लैंड में दो बार आमने-सामने होंगी। इससे इस हाई-वोल्टेज मुकाबले का माहौल पहले से ही गरमाने वाला है।

कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने कहा कि पाकिस्तान के खिलाफ मैच हमेशा खास होता है। उन्होंने टीम को शांत रहकर रणनीति पर टिके रहने और दबाव में बेहतर प्रदर्शन करने पर जोर दिया।

एफआईएच महिला विश्व कप क्वालिफायर

मनीषा के वार से बना रास्ता

भारतीय महिला हॉकी टीम ने एक बार फिर संयम, धैर्य और सही मौके पर वार करने की कला दिखाते हुए एफआईएच महिला विश्व कप क्वालिफायर के फाइनल में जगह बना ली है।

सेमीफाइनल में इटली के खिलाफ खेला गया मुकाबला आसान नहीं था, लेकिन निर्णायक क्षण में किए गए एक गोल ने पूरे मैच की दिशा तय कर दी। यह गोल आया मिडफील्डर मनीषा चौहान के स्टिक से, जिसने तीसरे क्वार्टर के 40वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर को गोल में बदलकर भारत को 1-0 की बढ़त दिला दी। यही बढ़त अंत तक कायम रही और भारत फाइनल में पहुंच गया।

मैच की शुरुआत तेज रही। भारत ने आक्रामक अंदाज दिखाया, लेकिन इटली ने भी तुरंत जवाब दिया। पहले क्वार्टर में दोनों टीमों के बीच बराबरी की टक्कर देखने को मिली। दूसरे क्वार्टर में भारतीय टीम ने खेल पर पकड़ मजबूत करनी शुरू की। मिडफील्ड से गेंद का नियंत्रण बेहतर हुआ और टीम ने आक्रमण के मौके बनाने शुरू किए।

तनाव के बीच भी वर्ल्ड कप खेलेगा ईरान

दुबई। मध्य पूर्व में बढ़ते तनाव के बीच ईरान की फुटबॉल टीम के 2026 फीफा वर्ल्ड कप में खेलने को लेकर चर्चाएं तेज हैं। हालांकि एशियाई फुटबॉल महासंघ (एएफसी) ने साफ कर दिया है कि अब तक ईरान की ओर से टूर्नामेंट से हटने की कोई आधिकारिक सूचना नहीं मिली है। ऐसे में संकेत साफ हैं-तनाव के बावजूद ईरान मैदान में उतरने की तैयारी में है।

कुआलालंपुर में एएफसी के महासचिव विंडसर जॉन ने कहा कि ईरान फुटबॉल फेडरेशन ने अब तक भागीदारी पर कोई संदेह नहीं जताया है। उन्होंने माना कि यह भावनात्मक और संवेदनशील समय है, लेकिन अंतिम फैसला फेडरेशन का होगा-और फिलहाल उनका रुख सकारात्मक है।

अमेरिका और इस्त्राइल के साथ बढ़ते तनाव और हालिया सैन्य घटनाओं ने इस मुद्दे को और गंभीर बना दिया है। ईरान के खेल मंत्री अहमद दोनयामाली ने भी संकेत दिए कि मौजूदा हालात में टीम की भागीदारी चुनौतीपूर्ण हो सकती है।

जब कद बन जाता है क्रिकेट का हथियार

जन जन विचार
...✍ स्पोर्ट्स डेस्क

क्रिकेट के मैदान पर तेज गेंदबाज की ऊंचाई सिर्फ शारीरिक विशेषता नहीं होती, बल्कि वह खेल की दिशा तय करने वाला कारक बन जाती है। लंबा गेंदबाज जब गेंद छोड़ता है, तो वह सामान्य से अधिक ऊंचाई से निकलती है और पिच पर पड़ने के बाद तीखी उछाल लेकर बल्लेबाज तक पहुंचती है। यही कारण है कि आधुनिक क्रिकेट में लंबे तेज गेंदबाजों का महत्व लगातार बढ़ रहा है।

दुनिया के सबसे लंबे अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेटर मोहम्मद इरफान इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण हैं। 7 फीट 1 इंच (216 सेमी) लंबे इरफान ने 2010 से 2019 के बीच पाकिस्तान के लिए खेलते हुए अपनी ऊंचाई को गेंदबाजी की ताकत में बदला। उनकी गेंदें सामान्य गेंदबाजों की तुलना में अधिक उछाल लेती थीं, जिससे बल्लेबाजों के लिए उन्हें संभालना कठिन हो जाता था।

क्रिकेट इतिहास में कई ऐसे गेंदबाज हुए हैं, जिन्होंने अपनी ऊंचाई का प्रभावी उपयोग किया। मार्को यान्सेन लगभग 6 फीट 8 से 6 फीट 10 इंच लंबे हैं और वर्तमान दौर में अपनी उछाल और सटीकता के लिए पहचाने जाते हैं।

इसी तरह जोएल गार्नर 6 फीट 8 इंच की ऊंचाई के साथ अपने समय में घातक यॉर्कर के लिए प्रसिद्ध रहे। कर्टली एम्ब्रोस 6 फीट 7 इंच लंबे थे और उन्होंने 405 टेस्ट विकेट लेकर यह सिद्ध किया कि ऊंचाई के साथ अनुशासन जुड़ जाए तो गेंदबाज लंबे समय तक प्रभावी रह सकता है।

काइल जैमीसन और ब्लेसिंग मुजरबानी जैसे खिलाड़ी भी आधुनिक क्रिकेट में अपनी ऊंचाई और प्रदर्शन के कारण महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

तेज गेंदबाजी में ऊंचाई कई प्रकार से लाभ पहुंचाती है। ऊंचे बिंदु से छोड़ी गई गेंद तीखे कोण से बल्लेबाज तक पहुंचती है, जिससे उछाल बढ़ जाता है। लंबा कदम गति पैदा करने में मदद करता है, जबकि अधिक पहुंच क्षेत्ररक्षण और बल्लेबाजी दोनों में

सहायक होती है।

इसी वजह से चयनकर्ता विशेष रूप से लंबे तेज गेंदबाजों को प्राथमिकता देते हैं, खासकर टेस्ट क्रिकेट में जहां लगातार दबाव बनाना जरूरी होता है।

भारत में अत्यधिक लंबे गेंदबाज कम रहे हैं, लेकिन यहां के खिलाड़ियों ने कौशल के आधार पर अपनी पहचान बनाई है। ईशांत शर्मा 6 फीट 4 इंच लंबे हैं और उन्होंने 100 से अधिक टेस्ट मैचों में 300 से ज्यादा विकेट लिए।

जहीर खान और मोहम्मद सिराज ने स्विंग, लाइन और लंबाई के दम पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सफलता हासिल की।

यह स्पष्ट करता है कि भारतीय क्रिकेट में ऊंचाई से अधिक महत्व तकनीक, नियंत्रण और निरंतरता को दिया जाता है।

क्रिकेट का इतिहास यह भी बताता है कि सफलता केवल ऊंचाई पर निर्भर नहीं करती। सचिन तेंदुलकर और सुनील गावस्कर अपेक्षाकृत कम कद के बावजूद महान बल्लेबाज बने। मैल्कम मार्शल ने भी यह सिद्ध किया कि तेज गेंदबाजी में कौशल, अनुशासन और समझ अधिक महत्वपूर्ण हैं।

क्रिकेट में ऊंचाई तेज गेंदबाजों को अतिरिक्त बढ़त जरूर देती है, लेकिन यह सफलता की गारंटी नहीं है। मोहम्मद इरफान जैसे खिलाड़ियों ने इसे अपनी ताकत बनाया, वहीं अन्य खिलाड़ियों ने अपने कौशल से इतिहास रचा।

जन जन विचार
...✍ रंग-बिरंग डेस्क

सरके चुनर तेरी सरके...

'सरके चुनर तेरी सरके' को लेकर देशभर में चर्चा और विवाद तेज हो गया है। फिल्म 'केडी-द डेविल' के इस गाने में नोरा फतेही और संजय दत्त की मौजूदगी ने इसे और सुर्खियों में ला दिया है, लेकिन दर्शकों का एक बड़ा वर्ग इसे लेकर नाराज दिखाई दे रहा है।

रिपोर्ट्स और सोशल मीडिया प्रतिक्रियाओं के अनुसार, गाने में इस्तेमाल किए गए शब्द, डांस स्टेप्स और प्रस्तुति को 'अश्लील' और 'भद्दा' बताया जा रहा है।

दर्शकों का कहना है कि गाने में डबल मीनिंग ही नहीं, बल्कि सीधे-सीधे ऐसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया है जो पारिवारिक माहौल में सुनना मुश्किल है।

इसके अलावा, गाने के कुछ डांस स्टेप्स (खासकर नोरा फतेही के मूव्स और संजय दत्त के हुक स्टेप) को लेकर भी आलोचना हो रही है। कई लोगों का मानना है कि ये स्टेप्स मनोरंजन के बजाय 'विवाद खड़ा करने' के लिए बनाए गए हैं।

अश्लील गाने का यह मामला सिर्फ एक गाने का नहीं है, बल्कि पूरे मनोरंजन उद्योग पर सवाल खड़ा करता है।

एक दौर था जब किशोर कुमार और मोहम्मद रफी के गाने शालीनता और भावनाओं के प्रतीक माने जाते थे।

आज के समय में बढ़ती ऐसी घटनाएं यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि क्या लोकप्रियता के लिए संस्कृति और मर्यादा से समझौता किया जा रहा है?

'आजादी' और सामाजिक जिम्मेदारी के बीच संतुलन जरूरी

मनोरंजन जरूरी है, लेकिन उसकी एक सामाजिक जिम्मेदारी भी होती है। अगर मनोरंजन के नाम पर अश्लीलता को बढ़ावा दिया जाएगा, तो इसका असर समाज और नई पीढ़ी पर पड़ना तय है। अब जरूरत है संतुलन की, जहां कला की स्वतंत्रता भी बनी रहे और सामाजिक मर्यादा भी सुरक्षित रहे।

मनोरंजन समाज का दर्पण होता है, लेकिन जब यह दर्पण ही धुंधला होने लगे तो चिंता स्वाभाविक है। लोकप्रियता और व्यावसायिक सफलता की दौड़ में क्या हम सांस्कृतिक सीमाओं को पीछे छोड़ रहे हैं?

दर्शकों, निर्माताओं और सेंसर संस्थाओं-तीनों को मिलकर यह तय करना होगा कि मनोरंजन की आजादी और सामाजिक जिम्मेदारी के बीच संतुलन कैसे बनाए रखा जाए।

नोरा ने कहा-थैंक्यू

नोरा फतेही के गाने 'सरके चुनर' पर छिड़े विवाद ने बड़ा रूप ले लिया है। मामला संसद तक पहुंचा और सरकार द्वारा गाने के हिंदी वर्जन पर रोक भी लगाई गई। इस बीच नोरा ने खुद सामने आकर पूरे विवाद पर अपनी सफाई दी है-और हैरानी की बात यह रही कि उन्होंने विरोध करने वालों को धन्यवाद भी कहा।

नोरा ने साफ किया कि यह गाना उन्होंने 3 साल पहले कन्नड़ भाषा में शूट किया था। हिंदी वर्जन से उनका कोई लेना-देना नहीं है। उनका आरोप है कि फिल्म केडी के मेकर्स ने बिना अनुमति गाने को हिंदी में रिलीज कर दिया। नोरा ने कहा कि प्रमोशन के लिए उनकी और संजय दत्त की एआई से बनी तस्वीरें इस्तेमाल की गईं, जो उन्हें बिल्कुल स्वीकार नहीं। नोरा ने जनता और फैंस का धन्यवाद किया कि उन्होंने इस गाने का विरोध किया और इसे प्लेटफॉर्म से हटवाया। उनका कहना है कि ऐसे कंटेंट के लिए मेकर्स को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए, कलाकारों को नहीं।

दस मिनट में बनाएं हेल्दी चुकंदर-ओट्स डोसा

अगर सुबह समय कम हो और हेल्दी भी खाना हो, तो यह चुकंदर-ओट्स डोसा एकदम परफेक्ट है। बिना भिगोए, बिना खमीर-बस 10 मिनट में तैयार!

आवश्यक सामग्री : ½ कप ओट्स, ½ कप धुली मसूर दाल, ½ चुकंदर (छिला और कटा हुआ), 1-2 हरी मिर्च, 1 छोटा टुकड़ा अदरक, ½ छोटा चम्मच जीरा, नमक स्वादानुसार, थोड़ा पानी (पीसने के लिए) व तेल/घी (पकाने के लिए)।

बैटर बनाने का तरीका : ओट्स, मसूर दाल, चुकंदर, हरी मिर्च, अदरक, जीरा और नमक मिक्सर में डालें। थोड़ा पानी डालकर महीन पेस्ट बना लें। बैटर न ज्यादा गाढ़ा हो, न ज्यादा पतला-डोसे जैसा ही रखें।

डोसा बनाने की विधि : तवा गरम करें और हल्का तेल लगाकर पोंछ लें। एक करछी बैटर डालकर गोल-गोल फैलाएं। किनारों पर थोड़ा तेल/घी डालें। मध्यम आंच पर पकाएं जब तक डोसा सुनहरा और कुरकुरा न हो जाए। फोल्ड करके गरमा-गरम निकाल लें।

पूर्वांचल प्रिंट्स की ओर से राजनाथ पाल द्वारा जीएमसीएच रोड, हरबाला मार्केट, भांगागढ़, गुवाहाटी-781005 से प्रकाशित एवं मुद्रित। संपर्क : 69001 26012
ई-मेल:official.janjanvichar@gmail.com, वेबसाइट : www.janjanvichar.in ●संपादक : धनेश्वर चौधरी